अंक – सैतीसवाँ Volume -37
03 July 2012, Tuesday

HIS HOLINESS
MAHARISHI MAHESH YOGI JI

# E-Gyan

Monthly Digital News Letter of Maharishi Organisations - India

महर्षि संस्थान भारत का मासिक सूचना पत्र

महर्षि संवत्सर – ५७ विक्रम संवत्सर – २०६९ आषाढ़ शुक्ल पक्ष १५, मंगलवार ३, जुलाई

E-mail - egyan@mahaemail.com and egyanmonthly@gmail.com Web site - www.e-gyan.net





## श्री गुरु पूर्णिमा महोत्सव विशेषांक २०१२

परम् पूज्य महर्षि महेश योगी विजयन्तेतराम्

परम् पूज्य ब्रह्मलीन महर्षि महेश योगी जी सच्चे अर्थों में महर्षि थे, युगान्तरकारी आध्यात्मिक महापुरूष थे, भारतीय संस्कृति के अनन्य संदेश वाहक थे, विश्व बंधुत्व की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे, प्राचीनता एवं आधुनिकता का अभूतपूर्व समन्वय थे। यह संसार का एक आश्चर्यजनक सत्य है जिसका मूल्याकंन वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ियाँ सदैव करती रहेंगी। महर्षि महेश योगी जी ही एक ऐसे प्रथम भारतीय मनीषी है जिन्होंने पाश्चात्य देशों एवं सम्पूर्ण विश्व में भारतीय योग विद्या एवं वैदिक ज्ञान को वैज्ञानिक रूप में प्रतिष्ठित किया एवं वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा इस बात की पुष्टि की कि आधुनिक विज्ञान, तकनीकि एवं समस्त सामाजिक शास्त्रों का आधार हमारे वैदिक वाङ्मय एवं वेदों में निहित है।

महर्षि जी महान् सिद्ध पुरूष, असाधारण संगठनकर्ता, अपराजेय प्रचारक एवं मौलिक तत्व चिन्तक थे, उनके व्यक्तित्व में दिव्य–शक्ति युक्त सम्मोहन था, वाणी में अलौकिक आकर्षण, विचारों में अद्भुत संप्रेषणीयता थी।

महर्षि जी ने आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक तीनों ही क्षेत्रों में या यह कहें की ज्ञान–विज्ञान का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है (आदि से अंत तक) जिसे, समृद्ध न किया हो। महर्षि जी का सबसे बड़ा योगदान है– उन्होंने भारतीय ज्ञान 'वेद' को विज्ञान के रूप में संपूर्ण विश्व में प्रतिस्थापित किया।

महर्षि जी ने वेद एवं विज्ञान दोनों ही को एक नया आयाम दिया और यह सिद्ध कर दिया की भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान एक दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं। आधुनिक सिद्धांतों एवं विज्ञान का आधार ''प्रकृति'' पोषक होना चाहिये तभी वह सार्थक है। आध्यात्म के बिना 'ज्ञान', पूर्ण ज्ञान के बिना 'विज्ञान' अधूरे हैं एवं सृष्टि के लिये घातक हैं।

महर्षि जी ने यह सिद्ध किया की जिस आधुनिक वैज्ञानिक–वस्तुनिष्ठ ज्ञान एवं प्रमाणिकता की हम बात करते हैं उसका आधार वेद ही है। भारतीय वैदिक वाङ्मय के 40 क्षेत्र जिसमें चारों वेद, छः वेदांग, छः उपांग, चार उपवेद (चार उपवेदों में आयुर्वेद की नौ संहितायें), छः ब्राह्मण, छः प्रातिशाख्य सम्मिलित हैं वह हमारे भौतिक शरीर का आधार है। आधुनिक विज्ञान, आधुनिक प्रबंधन, आधुनिक कला एवं सामाजिक विज्ञान की सभी विधाओं का आधार है। आधुनिक विज्ञान की सभी शाखायें कला, साहित्य, ज्ञान–विज्ञान, राजनीति, रक्षानीति, शिक्षानीति, कृषिनीति, विदेशनीति एवं प्रबंधनीति आदि वेद एवं वैदिक वाङ्मय में ही समाहित हैं।

पिछली कई शताब्दियों में शायद ही कोई ऐसे योगी या मनीषी होंगे, जिन्होंने वैदिक ज्ञान एवं विज्ञान को व्यवहारिक एवं मानवीय दृष्टिकोण से परिभाषित किया हो। महर्षि जी का जन्म तो केवल इसीलिये ही हुआ था कि वे एक बार पुनः समस्त सृष्टि को सुख, शांति, आनंद एवं ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का पाठ याद दिला सकें यह

समझा सकें कि भगवान राम का ''रामराज्य'' एवं भगवान कृष्ण का ''अधर्म पर धर्म की विजय'' का मंत्र आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना त्रेता एवं द्वापर में था।

पिछली कई शताब्दियों का यदि ऐतिहासिक विश्लेषण करें तो यह निर्विवाद होगा की त्रेता एवं द्वापर के बाद अगर किसी मनीषी ने इस सम्पूर्ण वसुंधरा–पूरे विश्व को एकजुट एवं सुख, शांति व समृद्ध देखने का संकल्प किया तो वह केवल महर्षि जी ही थे। भगवान आदिशंकराचार्य के काल से आज तक शायद ही किसी महापुरुष ने इस वेद भूमि, देव भूमि, पूर्ण भूमि भारत में दैवीय अवतार लेकर ''सम्पूर्ण विश्व कल्याण'' के लिये इतने विविध आयामों में कार्य किया हो। महर्षि महेश योगी जी ने सम्पूर्ण विश्व में भारतीय वेद विज्ञान, ध्यान योग का वैज्ञानिक विश्लेषण कर, समस्त विश्व के कल्याण, सुख, शान्ति, समृद्धि एवं अजेयता के लिये आधार तैयार कर, वेद विज्ञान को पुनर्स्थापित कर, भारत को विश्व गुरुत्व प्रदान किया। ऐसे ब्रह्मज्ञानी, भगवत्–पुरूष, युग–दृष्टा महर्षि जी को मेरा शत्–शत् प्रणाम।

ब्रह्मलीन परम् पूज्यनीय महर्षि महेश योगी जी के दैवीय निर्देशन में हजारों विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, प्रबंध संस्थान एवं अन्य शैक्षणिक संस्थान पिछले 55 वर्षों से चल रहे हैं। भारत में महर्षि शिक्षा संस्थान एकमात्र ऐसा संस्थान है, जो विश्व की विशालतम शैक्षणिक संस्थाओं की श्रंखलाओं के माध्यम से पारम्परिक शिक्षा के साथ–साथ जीवनपरक शिक्षा एवं मूल्यों को विश्व में पुनर्स्थापित कर रहा है व शिक्षा को पूर्ण और जीवनपरक बनाने के लिये अपना योगदान दे रहा है। भारतवर्ष में एक लाख से अधिक विद्यार्थी विभिन्न महर्षि विद्या मंदिर, महर्षि प्रबंध संस्थान, महर्षि महाविद्यालय, एवं महर्षि सेण्टर फॉर एजूकेशनल ऐक्सीलेंस में अध्ययनरत हैं। इसके साथ ही भारत में महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश व महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नालॉजी छत्तीसगढ़ की स्थापना की गई है, जहां प्रबंध एवं प्रौद्योगिकी में उच्च स्तरीय शोध के साथ–साथ जीवनपरक वैदिक ज्ञान का भी अध्ययन एवं अध्यापन किया जा रहा है।

राष्ट्रकुल के 192 देशों में अपनी संस्कृति एवं शैक्षणिक उपस्थिति दर्ज करने के पीछे पूज्य महर्षि जी का यही उद्देश्य था कि इनके माध्यम से वे समस्त विश्व–समूहों, संगठनों, व्यक्तियों को अपने से जोड़कर विश्व बंधुत्व, विश्व शांति का आदर्श स्थापित कर सकें एवं विश्व की भावी युवा पीढ़ी विश्व बंधुत्व के सिद्धांत को समझें एवं सभी राष्ट्रों में अजेयता की भावना का परिमार्जन हो सके।

अगर हम महर्षि जी के सिद्धांतों को समझें तो हमें यह ज्ञात होगा कि महर्षि ने व्यक्ति विशेष को भी महत्व दिया और यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि एक व्यक्ति भी परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व में परिवर्तन ला सकता है न कि केवल एक राजा, एक राष्ट्राध्यक्ष या राष्ट्र अध्यक्षों का एक समूह। महर्षि जी ने हमें यह संदेश दिया कि, एक व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ा परिवार, परिवार से जुड़ा समाज, समाज से जुड़ा राष्ट्र एवं राष्ट्रों से जुड़ा विश्व समुदाय, एक व्यक्ति एवं व्यक्तियों की सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। अगर विश्व को बदलना है तो समाज को नहीं बल्कि उसकी न्यूनतम ईकाई व्यक्ति में परिवर्तन लाना होगा और यह परिवर्तन हमारे वैदिक वाङ्गमय एवं उसके नियमों एवं सिद्धांतों से ही संभव है।

महर्षि संस्थान द्वारा प्रकाशित 'ई–ज्ञान' मासिक सूचना पत्र का यह अंक श्री गुरुपूर्णिमा महोत्सव के पावन पर्व पर श्री गुरुदेव एवं परम पूज्य महर्षि जी के श्री चरणों में समर्पित है।

संपादकीय
टी. सी. पाठक
ई–ज्ञान मासिक सूचना पत्र

# Maharishi Ji on Shri Gurudev Swami Brahmanand Saraswati Ji Maharaj

He was Maha Yogiraj (greatest of Yoga Teachers) in the family of the Yogis of India, and was held by the Gyanis (Realized) as personified Brahmanandam (universal Bliss or Cosmic Consciousness)–the living expression of "Purnam idam".

The divine radiance blooming forth from his shining personality revealed the truth of "Purnam Idam" and his Sahaj-Samadhi (all time natural state of Cosmic Consciousness) brought home the truth of both– "Purnam adah" and "Purnam idam". It was the perfection of this great Spiritual Master that innovated a spiritual renaissance in Northern India and wherever he traveled.

This great pride of India was "Rajaram" in his early days when he was the love of his great family, and was cherished as the "rising sun" in the community of Mishra Brahmans of the village Gana, near Ayodhya in Uttar Pradesh, North India. He was born on the 20th December 1868, but his hour of nativity claimed him for the recluse order and not for that of the secular.

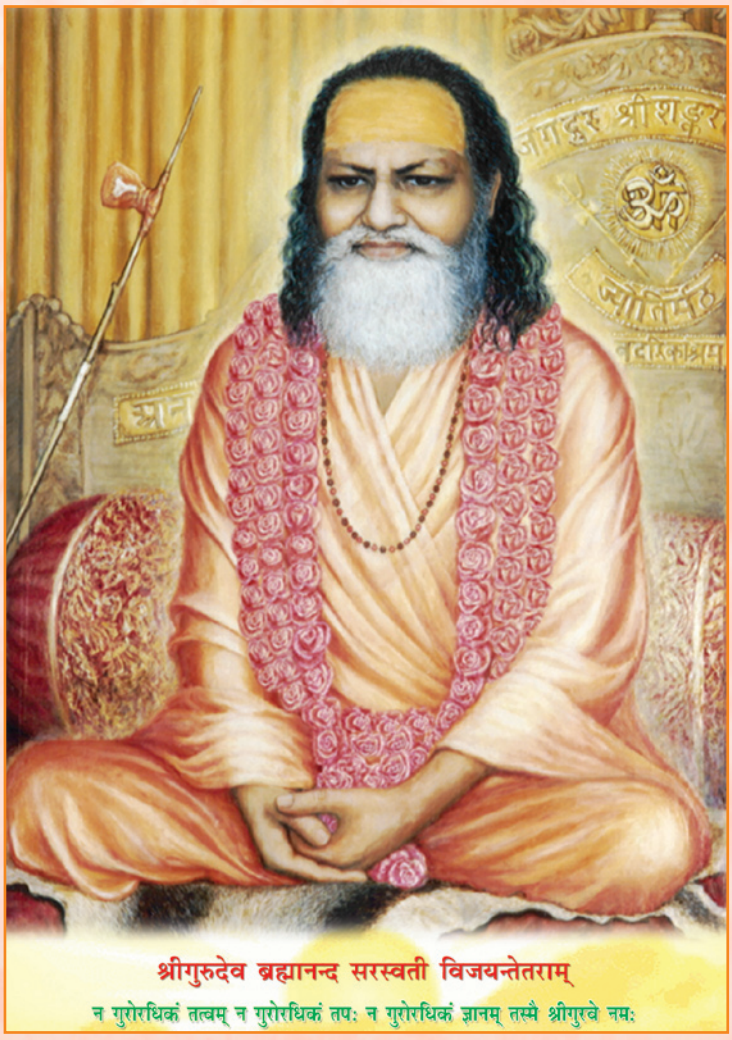


At the tender age of nine, when the other children of the world were mostly busy in playgrounds, he had matured in the idea of renunciation, and by continuous and deep thinking was convinced of the futility and evanescence of worldly pleasures.

He realized so early that real and lasting happiness cannot be had without the realization of the Divine. The joys and pleasures that are obtained from the phenomenal world are mere shadows and smudged images of the ideal happiness and bliss that is not far from man, but exists in his own heart, enveloped by the dark clouds of ignorance and illusion.

When he was barely nine years old, he left home and went to the Himalayas in search of God-the Light that dispels the great darkness in the human mind-the darkness that stands between man and the inner enlightenment.

On the path of the Divine a proper guide is necessary. During the search for a perfect spiritual guide, he came across many Masters and good beginners, but none of them came up to the ideal that he had set for himself.

He desired his spiritual Master to be not only well-versed in philosophic learning, but also to be person of realization; and over and above these dual achievements, be should be a life celibate, perhaps the natural and legitimate desire of an aspirant who himself had decided to maintain that high ideal for life.

In the world as it is constituted today, to find a personality combining these three conditions and attributes

is difficult, if not altogether impossible, and so the young truth-seeker has to wander far and long before he arrived at the goal of his search.

After about five years of wandering in the Himalayas, he reached the township of Uttar-Kashi. In that "Valley of the Saints", at that small and distant Himalayan hermitage, there resided in those days a great spiritual master, Swami Krishnanand Saraswati, a sage deeply versed in philosophical lore, representing a rare and perfect blend of theory and practice, of learning and realization.

To that realized soul, the young ascetic surrendered himself for being initiated into the mysterious realness of the spirit, whose real key practices are attainable not from books and treatises, but only from perfect spiritual Masters, who silently pass these top secret practices from heart to heart.

After some time, with the permission and order of his Master, he entered a cave at Uttar-Kashi with a resolve not to come out before he had realized the Light Supreme. His desire to attain the highest knowledge was not merely an ideal wish or intention; it was a mighty, overpowering determination that burned like fire in his heart. It permeated every particle of his being and bade him not to rest or stop before the complete realization of the Bliss Eternal.

Soon he arrived at the heatless, smokeless effulgence of the Self and realized the Divine Truth, Cosmic Consciousness-the Ultimate Supreme Reality-Sat-Chid-Anand-Nirvana.

The greatest attainment of a saint is his life itself, the high edifice of realized Upanishadic living that develops from direct experience of Reality. To understand that inner personality one must approach such realized souls with an open and receptive mind and try to visualize the great internal life that is the basis of their actual and real form of living.

At the age of thirty-four he was initiated into the order of Sanyas by his Master at the greatest world fair, "Kumbha Mela", which is held once in twelve years at the junction of the two holy rivers, Ganga and Yamuna at Allahabad City. Then he again proceeded to blessed solitude, the only blessedness. This time he did not go to the Himalayas, but went to the Amarkantakas, the source of the holy river Narmada in Central India.

For the greater part of his life he lived in quiet, lonely places, the habitats of lions and leopards; in hidden caves and thick forests where even the mid-day sun frets and fumes in vain to dispel the darkness that may be said to have made a permanent abode in those solitary and distant regions of the Vindhyagiris and Amarkantakas (mountain ranges).

He was out of sight of man but was well marked in the eyes of the destiny of the country. For more than one and a half centuries the light of Jyotir-Math (the principal seat of Shankaracharya) was extinct, and North India had no Shankaracharya to guide the spiritual destiny of the people.

Here was a bright light of spiritual glory well adorned by the perfect discipline of Sanatan Dharm, but it was hidden in the caves and valleys, in the thick forests and mountains of central India, as though the blessed solitude was giving a proper shape and polish to personality which was to enlighten the darkness that had overtaken the spiritual destiny of the country, by the flash of his mere presence.

It took a long time, twenty years, to persuade him to come out of his solitude and accept the holy throne of Shankaracharya of Jyotir-Math in Badrikashram, Himalayas. At the age of 72, in the year 1941, a well-marked time in the political and religious history of India, he was installed as Shankaracharya of Jyotir-math, and that was s turning point in the destiny of the nation. The political freedom of the country dawned under his divine grace, and he was revered by Dr. Rajendra Prasad, the first President of India.

At the conference of the eminent philosophers of the world during the Silver Jubilee Celebrations of the Institute of Indian Philosophers, held at Calcutta in December 1950. Dr. S. Radhakrishnan, the famous philosopher and the successor of Dr. Rajendra Prasad as President of India, addressed Shri Guru Dev as

"Vedanta Incarnate" (Truth Embodiment).

His policy of spiritual enlightenment was all embracing. He inspired all alike and gave upliftment to every-one in his religious, virtuous, moral, and spiritual life. He was never a leader of any one party–all parties found a common leadership in him. All the differences and dissensions of various castes, creeds, and Sampraday as dissolved in his presence, and every party felt itself to be a thread in the warp and woof of society and that all the threads make the cloth and that no thread can be taken out with advantage from it. Such was his universal and all-embracing nature.

His entire personality exhaled always the serene perfume of spirituality. His face radiated that rare light which comprises love, authority, serenity, and self-assuredness; the state that comes only by righteous living and divine realization. His Darshan made the people feel as if some ancient Maharishi of Upanishadic fame had assumed human form again, and that it is worthwhile leading a good life and to strive for realization of the Divine.

His spiritual teachings are simple and clear and go straight home to the heart. He strictly adhered to the Vedic Principles of inner development laid down by the systems of Indian philosophy and ethics, and he raised his voice never in opposition but always in firm support of the truths and principles contained in the concept of Dharma. He gave to the people the spirit of religion and made them happy in every walk of life.

As time would have it, after twelve years that flashed by, the Manifested merged with its Origin, the Unmanifested, and Brahma Leena Brahm anandam is now appearing in the hearts of his devotees as waves of Brahmanandam (Bliss). He cast of his mortal coil, but left behind a few others in mortal coil to keep the light of his grace shining and pass on the torch of his teachings from hand to hand for all the centuries to come.

The Spiritual Regeneration Movement was started under his direct inspiration that we received on the 31st December 1957, the last day of his 89th Birthday Anniversary at Madras.

His divine plan of Spiritual Regeneration of the world is being worked out quite naturally by the stronghold of time, which is found marking a change in human destiny. We only pray him to keep on guiding us'.

*–Maharishi*

Jai Guru Dev

**E-Gyan**
**Editorial Board**

# श्री गुरूदेव स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी महाराज के ब्रह्म स्वरूप की व्याख्या पूज्य महर्षि जी के शब्दों में

सन् 1957 में **महर्षि जी** ने विश्वव्यापी वैदिक पुनरूत्थान आन्दोलन की नींव रखी। **महर्षि जी** के शब्दों में ''इस आन्दोलन का प्रारम्भ वास्तव में गुरूदेव की शान्त एवं अनन्त चेतना में ही हुआ था''।

**श्री गुरूदेव** के जीवन के विषय में बोलते हुए **महर्षि जी** कहते हैं– **गुरूदेव** का जीवन एक शांत, अखण्ड एवं अनन्त चेतनावान जीवन था। गुरूदेव के जीवन के ब्रह्म रूप के संबंध में बताना बहुत कठिन है क्योंकि यह एक सन्यासी का जीवन था जो नगर की भीड़–भाड़ से दूर किसी जंगल में वृक्ष के नीचे या गुफा में बैठकर ध्यान एवं आध्यात्म चिन्तन किया करते थे। लगभग ग्यारह वर्ष की आयु से लेकर सत्तर वर्ष की आयु तक गुरूदेव जी की यही जीवन शैली थी, परन्तु अब मैं जब इसके बारे में सोचता हूँ तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि किसी व्यक्ति का जीवन जब शांत चेतना के आधार पर स्पंदित होता है तो यह निश्चय ही आने वाले दिनों में किसी महान कार्य को क्रियान्वित करने के लिए एवं उस कार्य में पूर्ण रूप से स्वयं को नियोजित करने के लिए ही होता है। जीवन में शांत चेतना का जो मूल्य है, उसका मूल्यांकन केवल उस भाव के द्वारा प्रकट, क्रिया में ही होता है। इसकी आवश्यकता भी थी क्योंकि जीवन जटिल से जटिलतम् होता जा रहा है। जीवन का बाह्य रूप अधिक से अधिकतम होता जा रहा था, इसलिए यह आवश्कता थी कि जीवन के आन्तरिक शांत भाव को जगाया जाय। इसलिए प्रकृति ने एक सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति का निर्माण किया जिसके द्वारा पूरे विश्व को आज एक नई जीवन शैली प्राप्त हुई है और वो व्यक्ति थे हमारे **परम् पूज्य गुरूदेव स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी महाराज**।

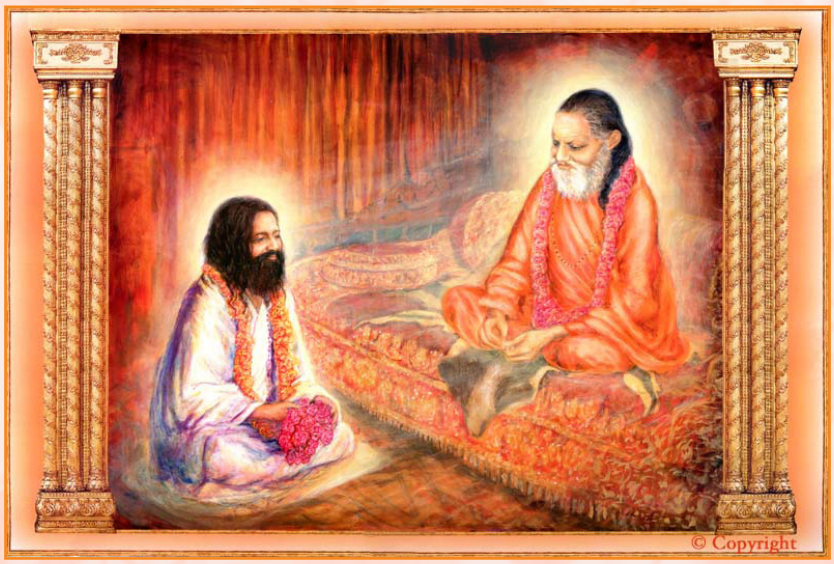


''गुरूदेव हमारे अत्यन्त निकट के सम्माननीय एवं पूज्यनीय व्यक्ति एवं साक्षात् वेदमूर्ति के रूप में विराजमान हैं, जो वैदिक गुरूओं की सहस्रों वर्षों से चली आ रही परम्परा के एक प्रकाशपुंज के समान हर समय हमारे चारों ओर विद्यमान हैं''।

**महर्षि जी** के शब्दों में– वैदिक परम्परा को इसके पूर्ण एवं शुद्ध रूप में– जो जीवन के एकीकरण का सर्वोच्च ज्ञान है– वैदिक विद्वानों ने सहस्त्रों वर्ष से सम्भाल कर रखा। समय–समय पर वैदिक विद्वानों एवं ऋषियों ने अपने ज्ञान एवं शुद्ध चेतना के आधार पर इस महान वेद विद्या का पूर्ण जागरण किया जिससे मानव समाज के क्रमिक विकास में इस ज्ञान का पूर्ण उपयोग हो एवं समस्त मानव के कष्टों को दूर कर, विकास के पथ पर आगे बढ़ने एवं अपने अन्दर जीवन की पूर्णता को जागृत करने की शक्ति का संचार हो। वैदिक परम्परा के ऋषियों एवं गुरूओं ने इस सत्य को खूब समझा एवं प्रत्येक गुरु ने अपनी पीढ़ी में इसे अपने ढंग से लोगों को समझाया एवं इस विद्या का ज्ञान दिया जिसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन व प्रत्येक पीढ़ी में, अपने कर्म के क्षेत्र में उच्चतम जीवन मूल्यों एवं 'आध्यात्म' के क्षेत्र में उच्चतम् सोपान को पार कर सके।

पीढ़ी दर पीढ़ी यह वैदिक परम्परा प्रत्येक व्यक्ति को एक नयी प्रेरणा का स्त्रोत प्रदान करती आ रही है। समय ही ऐसा तत्व है जिसके प्रभाव से यह ज्ञान कभी अधिक चमकता है और कभी कम चमकता है। यही

वह तत्व है जिसके कारण इस ज्ञान का पुनरूत्थान इतिहास के पृष्ठों में होता आ रहा है।

''यदि समय का प्रभाव होता तो जीवन से अंधकार बहुत समय पहले ही अन्तर्ध्यान गया होता। इस युग के **इस युगांतकारी आन्दोलन एवं वैदिक पुनरूत्थान का श्रेय हमारे गुरूदेव महायोगीराज परम् पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी को जाता है**। हम उनका स्मरण करके उनके आगे श्रद्धापूर्वक शीष झुकाते हुए उनके द्वारा दिये गये इस महान ज्ञान के लिए उनका आभार प्रकट करते हैं''।

## हमारे गुरूदेव

गुरूदेव का स्मरण करते हुए **महर्षि जी** कहते हैं कि वे हमारे पथ–प्रदर्षक थे, जिनकी ईश्वरीय शक्ति एवं महात्म्य के प्रकाश में हम सब प्रकाशित होते हैं। जैसे ब्रह्माण्ड में नक्षत्र एवं तारे चमकते हैं, एवं पूरे ब्रह्माण्ड को आलोकित करते हैं, वैसे ही हमारे पथ प्रदर्शक **स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी महाराज** अपने ज्ञान के प्रकाश से पूरे वातावरण को आलोकित करते थे। जगत गुरू शंकराचार्य की अखण्ड परम्परा के हैं हमारे गुरूदेव एवं वे उज्ज्वल नक्षत्र जैसे हमेशा चमकते रहेंगे।

**गुरूदेव** योग के महान शिक्षक थे एवं स्वयं महायोगीराज थे। योगी एवं ज्ञानियों के द्वारा भी यह कहा जाता था कि **गुरूदेव ब्रह्मानंद जी** वेद को एक साक्षात मानव मूर्ति हैं, पूर्णमदः, पूर्णमिदं के एक मानव रूपी उदाहरण हैं। उनके व्यक्तित्व से जो प्रकाश निखरता था वो पूर्णमदः, पूर्णमिदं को भी सिद्ध करता था। उनकी सहज समाधि हर समय प्राकृतिक रूप से तुरियातीत चेतना में विराजमान इस बात का द्योतक था कि उनके जीवन में पूर्णमदः एवं पूर्णमिदं के सिद्धांतो का कितना प्रभाव है। **गुरूदेव** के आध्यात्म भाव एवं उत्तम आदर्शों ने पूरे उत्तर भारत में आध्यात्मिकता का नव जागरण किया ।

भारत के इस महान् सपूत का बाल्यावस्था में राजाराम नाम रखा गया था। राजाराम का जन्म 20 दिसम्बर 1868 में एक ब्राह्मण परिवार में उत्तर प्रदेश के अयोध्या के निकट ग्राम गाना में हुआ।

नौ वर्ष की अल्पायु में जब दूसरे बच्चे खेल के मैदान में व्यस्त रहते थे, तब राजाराम की समझ दूसरे बच्चों से कहीं अलग थी एवं वे किसी गहरे चिन्तन में सदा लीन रहते थे। इसी आयु में उन्होंने गृहस्थ जीवन छोड़ने का निश्चय कर लिया था। इसी आयु में उन्हें यह अनुभव एवं आभास हो गया था कि सत्य एवं अखण्ड आनंद की प्राप्ति के बिना दैवीय बोध संभव नहीं है। बाह्य जीवन का जो आनन्दचित रूप है वो केवल शुद्ध आनंद एवं आत्मा की धुंधली छवि की परछाँई है, इस असीम आनन्द का छोर स्त्रोत से दूर नहीं है अपितु व्यक्ति के ह्रदय में ही विराजमान है जो अज्ञान एवं भ्रम की चादर से ढका हुआ है।

जब राजाराम केवल नौ वर्ष के थे तो उन्होनें घर को त्याग दिया और भगवत प्राप्ति के लिए हिमालय में चले गये। भगवत प्राप्ति का अर्थ यह है कि जिसके द्वारा व्यक्ति के मन और मस्तिष्क में जो अंधकार विद्यमान है उसे जड़ से दूर किया जा सके। यही वह अंधकार रूपी अज्ञानता है जो व्यक्ति और ज्ञान के बीच में एक दीवार जैसी बनी रहती है।

दैवीय उपलब्धि के मार्ग में चलने के लिए राजाराम को एक मार्गदर्शक की आवश्यकता थी। राजाराम आध्यात्मिक गुरू की खोज में अनेक गुरूओं के पास गये, परन्तु कोई भी उनके अपने स्तर के लायक नहीं था। वे चाहते थे कि उनके गुरू न केवल दर्शन तथा अन्य विषयों में ज्ञानी हों, अपितु साथ ही साथ वे व्यक्ति के आन्तरिक रूप– अन्तर्रात्मा को समझने वाले हों। इन दोनों पराकाष्ठाओं के ऊपर वो व्यक्ति ब्रह्मचारी हो। राजाराम के इस तीन गुण सम्पन्न गुरू की खोज के पीछे कदाचित बड़ा उद्देश था कि उन्होंने अपने जीवन को भी ऐसा ही त्रिगुण सम्पन्न बनाने का निश्चय किया था। आज के समाज में जैसा कि हम देखते हैं कि ऐसे त्रिगुण सम्पन्न व्यक्ति का मिलना कुछ कठिन है, परन्तु पूर्ण रूप से असम्भव नहीं। परन्तु राजाराम के लिए इन सब बातों का

कोई महत्व नहीं था क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि उनका यह प्रयास एक दिन अवश्य फल देगा। इस प्रकार छोटा सा बालक गुरू की खोज में एक जगह से दूसरी जगह और दूसरी से तीसरी, तीसरी से चौथी जगह पर घूमने लगा। अन्त में लगभग पांच वर्ष की अपनी इस खोज के पश्चात् वे हिमालय की गोद में बसे उत्तरकाषी में पहुँचे। उत्तरकाशी उन दिनों **''संतों की नगरी''** के नाम से जानी जाती थी एवं वहां बहुत बड़े विद्वान, प्रबुद्ध, आध्यात्मिक गुरू स्वामी कृष्णानंद सरस्वती का निवास था।

स्वामी जी दर्शन एवं वेदांत के विद्वान थे। अपने जीवन की पूरी शैली, उन्होंने दर्शन और वेदान्त के सिद्वान्त एवं प्रयोग दोनों से रचा था।

बालक राजाराम ने जो अब लगभग चौदह वर्ष के हो गये थे, इस महान आत्मा को देखते ही अपनी पूरी सत्ता उन्हें समर्पित कर दी। राजाराम यह चाहते थे कि उन्हें भी आत्म ज्ञान के इस रहस्यमय क्षेत्र को जानने का अवसर मिले, जिस 'ज्ञान' का क्षेत्र पुस्तकों व ग्रन्थों में नहीं लिखा है। गुरू जो परम्परागत रूप से इस ज्ञान की कुंजी को गुप्त रखते हैं, एवं शिष्य में मंत्र के द्वारा कानों में पहुँचाते हैं।

कुछ समय पश्चात अपने गुरू की आज्ञा एवं आदेश से राजा राम इस प्रतिज्ञा के साथ उत्तरकाशी की एक गुफा में विराजमान हो गये कि जब तक उन्हें उस सर्वोच्च ज्ञान का अनुभव नहीं हो जाता वो बाहर नही आयेंगें। ज्ञान के सर्वोच्च शिखर को जानने की यह इच्छा केवल एक इच्छा ही नहीं थी बल्कि एक भीष्म प्रतिज्ञा भी थी, जो इनके हृदय में भीतर ही भीतर ज्योति के रूप में जल रही थी। यह प्रतिज्ञा उनके भीतर के प्रत्येक अणु में प्रवेश करके इस बात को बार–बार स्मरण करा रही थी कि जब तक उन्हें अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो जाती, तब तक वे अपनी इस प्रतिज्ञा से स्थानाच्युत नहीं होगें।

इसके पश्चात उन्होंने आत्मदर्शन के दीप्त दिव्य प्रकाश का अनुभव किया जो निर्गुण, निराकार होने के साथ–साथ दैवीय सत्य एवं ब्राह्मीय चेतना का स्वरूप था, जिसे सच्चिदानंद एवं निर्वाण की स्थिति भी बताया जाता है।

किसी संत के लिए अपने जीवन में उपनिषद् के मूल्यों को उतारकर उसके अनुसार जीवन – यापन करना ही सबसे बड़ी उपलब्धि है। 34 वर्ष की आयु में कुम्भ मेले के महान पर्व में राजाराम को अपने गुरू के द्वारा सन्यास प्रदान किया गया। इसके पश्चात उन्होनें फिर तपस्या के लिए मध्य भारत की प्रसिद्ध नदी नर्मदा के उद्गम स्थल अमरकंटक के लिए प्रस्थान किया।

यद्यपि वे जन–साधारण को दृष्टिगोचर नहीं थे, परन्तु अपने देश के भविष्य के लिए प्रकृति के द्वारा उनका चयन हो चुका था।

165 वर्षों से ज्योतिर्मठ का शंकराचार्य पीठ रिक्त होने के कारण उत्तरी भारत की जनता का आध्यात्मिक पथ–प्रदर्शन करने वाला कोई भी उपलब्ध नहीं था। सनातन धर्म के सिद्धान्तों एवं प्रयोगों से जिनकी जीवन शैली अमरकंटक की गुफाओं में सच्चिदानंद रूप में विद्यमान थी एवं प्रकृति द्वारा इस साक्षात् वेदांतिक रूप को मानो ज्योतिर्पीठ के इस रिक्त को पूरा करने के लिए ही उसे और अधिक संवारा जा रहा था।

लगभग 20 वर्ष के लम्बे संयम एवं अथक प्रयास, निवेदन एवं विनती के पश्चात 72 वर्ष की आयु में भारत की इस महान आत्मा ने ज्योतिर्पीठ के शंकर्राचार्य के सिंहासन को सुशोभित किया। इस के साथ–साथ भारतवर्ष के राजनैतिक एवं धार्मिक इतिहास में एक नया मोड़ आया। भारत की स्वतंत्रता भी इन्हीं दिनों आपके दैवीय प्रभाव से सम्पन्न हुई। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आपका अत्यंत सम्मान करते थे। सन् 1950 में कलकत्ता में दार्शनिकों के अंतराष्ट्रीय सम्मेलन में बोलते हुये, भारत के महान दार्शनिक विद्वान एवं भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन ने आपको **'वेदांत की मानव मूर्ति'** उद्घोषित करते हुये आपका बहुत सम्मान किया। आपके आध्यात्मिक सिद्धांत अपने आप में पूर्णता प्रदान करने वाले थे। आपके दैवीय निर्देशन में प्रत्येक व्यक्ति में धर्म, अध्यात्म, जीवन मूल्य एवं कर्म के सिद्धांत अनुप्रेरित होते थे। आप किसी एक दल या पंथ का

नेतृत्व नहीं करते थे, परन्तु प्रत्येक दल एवं पंथ आपमें एक सार्वजनिक नेतृत्व के लिये हर समय आग्रह प्रकट करते थे। आपकी उपस्थिति में प्रत्येक जाति, सम्प्रदाय एवं धर्म के लोग आपसी भेद–भाव का भुलाकर एक ही माला के विभिन्न मोतियों जैसा सद्भावपूर्ण वातावरण का निर्माण करते थे। लोग इस बात से पूर्ण रूप से अवगत थे कि अगर इस माला से एक भी मोती निकल जाये तो माला कि पूर्णता, अपूर्णता में बदल जायेगी और ये इसलिये सम्भव था क्योंकि आपका दैवीय प्रभाव पूरे वातावरण को प्रभावित कर रहा था।

आपका पूरा व्यक्तित्व हर समय आध्यात्मिकता का विशुद्ध सुगंध का निःश्वसन करता रहता था। आपका मुख–मंडल हर समय एक दीप्त आभा से प्रज्ज्वलित रहता था, जो प्रेम, शान्ति, प्रभुत्व, स्वच्छता एवं आत्मबल का घोतक था। किसी व्यक्ति में व्यक्तित्व का यह रूप तभी सम्भव होता है, जब उसकी जीवन शैली वेदांतिक होती है एवं उसे ब्रह्म का अनुभव हो चुका होता है। आपके दर्शन मात्र से भक्तों को ऐसा प्रतीत होता था कि मानों साक्षात् किसी वैदिक काल के महर्षि ने देह धारण कर ली हो। आपके दर्शन के पश्चात जनसाधारण को इस बात का भी आभास होने लगा था कि जीवन में आध्यात्मिकता का, धर्म का एवं दैवीय अनुभव का कितना महत्व है।

इस तरह 12 वर्षों के पश्चात् समय एवं काल के नियम के अनुसार 'व्यक्त अपने शुद्ध रूप में अव्यक्त' से जा मिला। स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती महाराज ब्रह्मलीन हो गये और इस अद्भुत एवं विलक्षण व्यक्तित्व के प्रभाव से सहस्त्रों अनुयायियों एवं भक्तों के हृदय में ब्रह्मानंद की लहर छोड़ गये।

आप स्वयं के द्वारा प्रशिक्षित कुछ ऐसे विद्वान शिष्यों को अपने पीछे छोड़ गये, जिन्होंने आपके द्वारा बताये गये ज्ञान एवं कर्म के सिद्धांतों को आगे आने वाली प्रत्येक पीढ़ी के लिये प्रसारित करने का संकल्प लिया।

गुरुदेव के सम्बंध में बोलते हुये **महर्षि जी** कहते हैं–

जैसे कोई तृष्णार्थ कुऍं के पास पहुंचता है वैसे ही मैं गुरुदेव के चरणों तक पहुँच गया। हमारे अंदर एक उच्चतम् आदर्श रखने वाले गुरु की तृष्णा निरंतर बनी रहती थी। गुरुदेव के प्रथम दर्शन में ही मुझे इस बात की अनुभूति हुई कि आप ही वह व्यक्तित्व हैं जिनके चरणों में हम स्वयं को समर्पित कर सकते हैं। आप तत्कालीन संतों में परम् श्रद्धेय संत थे एवं दैवीय विशुद्ध चेतना के मानवमूर्त के रूप में प्रसिद्ध थे।

एक दिन किसी ने मेरे कानों में धीरे से यह बताया कि एक महान संत का आगमन् हुआ है, परन्तु वे जनसाधारण को दर्शन नहीं देते। अगर हम चाहें तो रात्रि के अंधकार में छुपकर उनके दर्शन कर सकते हैं। मैनें सोचा कि इससे अच्छी बात तो हो ही नहीं सकती। इसके पश्चात **महर्षि, गुरुदेव के प्रथम दर्शन** का वर्णन करते हुये कहते हैं कि रात्रि के अंधकार में केवल किसी वाहन के प्रकाश से प्रकाशित गुरुदेव की एक झलक ही मेरे लिये पर्याप्त थी, उसी क्षण मैंने अपना सम्पूर्ण जीवन उन्हें समर्पित कर दिया। इस प्रकार महर्षि कई दिनों तक गुरुदेव के इसी प्रकार दर्शन करते रहे।

''इसके पश्चात गुरूदेव वापस तपस्या में लीन होने के लिये अंतर्ध्यान हो गये। उस घने वन में यह निश्चित कर पाना असम्भव था कि उनका आगमन कहां से हुआ था एवं कहां अंतर्ध्यान हो गये। उनके निकट के जो व्यक्ति थे, केवल वही इस विषय से अवगत थे, परन्तु उन्हें इस बात का निर्देश था कि इस बात को किसी को ना बताया जाये, इसलिये गुरुदेव को खोज निकालना एक व्यर्थ प्रयास था''।

''ई–ज्ञान''
सम्पादक मण्डल

# श्री गुरु पूर्णिमा पर विशेष

**ब्रह्मचारी गिरीश**
अध्यक्ष, महर्षि विद्या मन्दिर विद्यालय समूह, भारत

जय गुरुदेव

सम्पूर्ण समाज को सद्मार्ग पर प्रशस्त करने हेतु, अध्यात्म व अधिदेव की जागृति और धर्म की स्थापना हेतु विश्व रचयिता ब्रह्मा जी ने 'गुरु' पद का सृजन किया। गुरु की सर्वोच्चता और महानता को स्थापित करने के लिये समय-समय पर स्वयं ब्रह्मदेव, भगवान् विष्णु और महादेव शिव जी ने, सूर्यदेव ने, देवियों ने और अनेक देवताओं ने गुरु की भूमिका निभाई।

गुरु ने अनादिकाल से अब तक न केवल अपने शिष्य समुदाय को जीवन के सभी विषयों का ज्ञान दिया, बल्कि पूर्ण वसुधा को अपना कर्मक्षेत्र माना और सभी प्राणियों को अपना परिवार मानकर उनके जीवन में सुख, सम्पन्नता, समृद्धि, परस्पर प्रेम, प्रसन्नता, शांति, अजेयता जैसे अत्यावश्यक तत्वों की प्राप्ति का विधान दिया और उपलब्धता का प्रबन्ध भी किया । मानव जीवन के तीनों प्रमुख क्षेत्रों अध्यात्म, अधिदेव, अधिभूत का अनुभव कराकर चतुर्विध फल धर्म, अर्थ, काम और मानव जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति सुनिश्चित करा देने तक का भार गुरुजनों ने अपने ऊपर ले लिया। गुरु की गुरुता इतनी बढ़ी कि वे ब्रह्मा, विष्णु और शिव स्वरूप हो गये, देवताओं की तरह पूज्य हो गये।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

अनेकानेक समबन्ध और सम्बन्धियों के होते हुए भी मनुष्य के लिये गुरु का स्थान 'न गुरोरधिकम्' हो गया, क्योंकि केवल गुरु का ही सामर्थ्य है कि वे 'शिव शासनतः' करा सकें, गुरु ही 'शिवम् शान्तम् अद्वैतम् चतुर्थम् मन्यन्ते स आत्मा स विज्ञेसः' का पाठ पढ़ा सकते हैं और आत्म दर्शन, आत्म साक्षात्कार करा सकते हैं।

हमारा परम सौभाग्य है कि हम ऐसी ही पवित्र, महानतम्, निर्मल, ज्ञान-वान्, शाश्वत् वैदिक गुरुपरम्परा की छत्र-छाया में स्थान पा सके और गुरुओं में सर्वश्रेष्ठ गुरु परम्परा के, एक श्रेष्ठतम गुरु का आशीष पा सके। हमारी वैदिक गुरु परम्परा भगवान् विष्णु से प्रारम्भ होती है और स्वयं ब्रह्म के साथ-साथ ब्रह्मर्षि वशिष्ठ, शक्ति, पाराशर, व्यास और शुकदेव जैसे तपस्वी और श्रेष्ठतम् महर्षि इसमें सम्मिलित हैं ।

आवश्यकतानुसार देवताओं का मानव रूप में अवतरण सदा ही होता आया है। इसी क्रम में भगवान चन्द्रमौली शिव शंकर के अवतार स्वरूप आदि शंकराचार्य लगभग २५०० वर्ष पूर्व पृथ्वी पर अवतरित हुए। तब से आज तक उनके ज्ञान, विज्ञान, साधना, तपमयी अलौकिक प्रभा विश्व ब्रह्माण्ड को, दिग-दिगान्त को निरन्तर आलोकित कर रही है। वैदिक इतिहास में भगवान् आदि शंकराचार्य के अविर्भाव से एक नवीन युग का प्रारम्भ हुआ। उस समय भारत में अवैदिकता, अनाचार, कदाचार, अत्याचार, अधर्म, नास्तिकता, आलस्य, प्रमाद और अकर्मण्यता अपनी चरम सीमा पार कर रही थी। भगवान शंकर के शंकराचार्य स्वरूप अवतरण ने भारतवर्ष और भारत के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व के जनमानस में वैदिक ज्ञान-विज्ञान के ज्योति पुँज से अध्यात्म की जागृति की, धर्म का पुनः उद्धार किया, धर्म की पुनः स्थापना की, वैदिक वांगमय और गीता का वास्तविक चित्रण अपने वास्तविक, निर्मल और विशुद्ध स्वरूप में प्रस्तुत हुआ। शाश्वत् वैदिक सिद्धांतों पर आधारित धर्म की पुनः स्थापना करने वाले आचार्य शंकर, भगवान

शंकराचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए और भारत सहित समस्त विश्व के लिये अर्चनीय, प्रार्थनीय, वन्दनीय, पूज्यनीय होकर शाश्वत् जगद्गुरु की गरिमा को प्राप्त हुये।

भगवान शंकराचार्य ने अनेक भाष्य लिखे, अनेक गद्य, स्तोत्र रचे और सम्पूर्ण भारत में यात्रा कर विभिन्न मत-मतान्तरों और धर्मभेदों को मिटाकर अनेक शिष्यों को पूर्ण वैदिक ज्ञान प्रदान किया।

वैदिक ज्ञान-विज्ञान और धर्म की स्थायी जागृति, प्रचार और प्रसार के लिये शंकराचार्य जी ने चार मठों-पीठों की स्थापना की। उत्तर में उत्तराम्नाय ज्योतिर्मठ, पूर्व में पूर्वाम्नाय गोबर्धनपीठ, दक्षिण में दक्षिणाम्नाय श्रृंगेरीपीठ और पश्चिम में पश्चिमाम्नाय शारदापीठ की स्थापना की। अपने परम शिष्यों में से ज्योतिर्मठ में तोटकाचार्य, गोबर्धनमठ में पद्मपाद, श्रृंगेरीमठ में सुरेश्वराचार्य और शारदामठ में हस्तामलक को पीठाधीश्वर-मठाधीश नियुक्त किया और उनके कार्य क्षेत्रों का भी विभाजन किया। उत्तर मठ को अथर्ववेद, पूर्व मठ को ऋग्वेद, दक्षिण मठ को यजुर्वेद और पश्चिम मठ को सामवेद का दायित्व दिया गया। ज्योतिर्मठ प्रथम मठ है और अद्वैत वेदान्त सिद्धांत के लिये यह मठ प्रसिद्ध है। बद्रीनाथ मंदिर की पुनर्स्थापना आचार्य शंकर ने की और मंदिर के निकट ही इस मठ की स्थापना हुई। इसी पावन स्थल पर उन्होंने अपनी तपश्चर्या के बल से दिव्य अलौकिक, आध्यामिक ज्योति प्रकट की। प्रस्थानत्रयी (उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और श्रीमद् भगवद्गीता) पर विराट् भाष्य भी यहीं लिखा और उपासना पर अनेक स्तोत्रों की रचना की । यहीं पर ज्योतिरीश्वर महादेव और पूर्णागिरी देवी की संस्थापना की।

शंकराचार्य जी ने जिस शहतूत के वृक्ष के नीचे बैठकर निर्विकल्प समाधि में स्थित होकर ब्रह्मानन्द की अनुभूति की वह विशालकाय वृक्ष 2500 वर्ष की आयु लिये आज भी विद्यमान है। तोटकाचार्य ज्योतिर्मठ के प्रथम शंकराचार्य हुए और इसके पश्चात् एक से बढ़कर एक आचार्यों ने इस पीठ को निरन्तर गौरवान्वित किया -

तोटको विजयः कृष्णः कुमारो गरुडः शुकः ।
विन्ध्यो विशालो वकुलो वामनो सुन्दरोऽरुणः ।
श्रीनिवासः सुखानन्दो नारायण उमापतिः ।
विद्याधरो गुणानन्दो नारायण उमापतिः ।
एते ज्योतिर्मठाधीशा आचार्याश्चिरजीविनः ।
यः एतान् संस्मरेन्नित्यं योगसिद्धिं स विन्दते ।।

कालान्तर में लगभग 165 वर्ष ज्योतिर्मठ का धर्म सिंहासन आचार्य रहित रहा। ऐसा कहा जाता है कि इन वर्षों में सन्त समाज ने और वैदिक पंडितों ने किसी संत विद्वान या सन्यासी को इस योग्य नहीं माना कि वे इस सर्वोच्च धर्मपीठ के सिंहासन पर आरुढ़ हो सकें। इसी बीच स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी की ख्याति सम्पूर्ण भारत में फैली जो वेदों और वैदिक वांगमय के एक प्रकाण्ड विद्वान, साधक, तपस्वी, और सिद्ध दण्डी सन्यासी थे। 9 वर्ष की आयु में आप गृह त्याग कर ज्ञान की खोज और तपस्या के लिये निकल पड़े थे। अपने गुरु स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती से आप सन्यास गृहण कर चुके थे और सारा समय हिमालय और वनों में तपस्या कर बिताते थे। सन्त समाज और वैदिक विद्वानों के लगभग 25 वर्षों के अथक प्रयास से ब्रह्मानन्द सरस्वती जी ने ज्योतिर्मठ के धर्म सिंहासन पर पदासीन होने की स्वीकारोक्ति प्रदान कर दीर्घकाल से आचार्य रहित पीठ का पुनरोद्धार किया।

चैत्र मास सन् 1941 में भारत वर्ष के श्रेष्ठतम सन्तों, विद्वानों और सन्यासियों की उपस्थिति में भगवान शिव जी की पावन नगरी वाराणसी में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी का ज्योतिर्मठ के धर्म सिंहासन पर वैदिक विधानों द्वारा राज्याभिषेक हुआ और वे भगवत्पूज्यपाद अनन्तश्रीविभूषित धर्मसम्राट जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य ज्योतिष्पीठोद्धारक ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज के रूप में प्रतिष्ठापित हुए।

पीठ पर आसीन हो पीठाधीश्वर ने धर्म ध्वजा को ऊंचा उठाने का कार्य प्रारंभ किया। मठ-मंदिरों, आश्रमों का

निर्माण, उत्तर भारत में धर्म प्रचार कर नागरिकों को वेद मार्ग पर पुनः प्रशस्त करना और दीर्घकाल से प्रतीक्षित सर्वोच्च धर्मगुरु और पीठ की मर्यादा और आदर्शपूर्ण गौरव की पुनर्स्थापना जैसे बड़े कार्य गुरुदेव स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी ने एक साथ ही प्रारंभ कर दिये।

आदि शंकराचार्य जैसे आचार्य अपनी पीठों के लिये चाहते थे, गुरुदेव ब्रह्मानन्द जी उससे भी कहीं अधिक खरे उतरे । भगवान् आदिशंकराचार्य ने शंकराचार्यों की योग्यता के सम्बन्ध में लिखा है कि-

शुचिर्जितेन्द्रियो वेदवेदांगादिविशारदः ।

योगज्ञः सर्वशास्त्राणां स मदास्थानमाप्नुयात् ।।

पवित्र इन्द्रियों को जीतने वाला, वेद और वेदांग का विद्वान्, योगज्ञ तथा सब शास्त्रों को भली भांति जानने वाला व्यक्ति ही मेरे स्थान को प्राप्त करे। अर्थात् मठ के अधीश्वरों को इन गुणों से युक्त होना चाहिये और-

अस्मत्पीठसमारूढ़ परिब्राडुक्त लक्षणः अहमेव्रेति विज्ञेयो यस्य देव इति श्रुतेः ।।

उक्त लक्षण से युक्त यदि सन्यासी मेरे पीठ पर अधिष्ठित हो तो उसे मेरा ही रूप समझना चाहिये।

परम संत, वैदिक मर्यादा के साकार विग्रह, अनन्त श्री विभूषित धर्मसम्राट स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती महाराज श्री जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर का व्यक्तित्व विशुद्ध निर्मल और ज्योतिर्मय व्यक्तित्व था जिसका दूर से दर्शन ही शान्तिप्रद होता था। योगियों ने इस दिव्य व्यक्तित्व में योगकला का प्रस्फुटन पाया, ज्ञानियों को इसमें ज्ञान गरिमा का आगार मिला, शान्त मनस्क समाहित चित्त महात्माओं ने इसमें परम शान्ति का स्थिर निवास देखा, विरक्तों ने इसे अपने निवृत्ति मार्ग का आदर्श माना और गृहस्थों ने इस ज्योतिर्मय व्यक्तित्व से अपने प्रवृत्ति पथ का प्रकाश पाया।

श्री चरण का व्यक्तित्व मानव विकास की अति उच्च अवस्था का प्रतीक था। तपस्वियों ने इसे तपश्चर्या साकार कहा। गुरुदेव त्याग वैराग्य का एक मूर्तिमान् स्वरूप थे। रेशमी भगवा वस्त्रों से अलंकृत, स्वर्ण सिंहासन पर समासीन उनकी स्वाभाविक समाधि मुद्रा की छटा अपूर्व होती थी। 'पद्मपत्रमिवाम्भसा' जो शास्त्रों में कहा गया है वह ठीक उनके ऊपर ही घटता था। समस्त वैभव के मध्य में रहते हुए भी उससे सर्वथा निर्लेप थे। भगवान् आदि शंकराचार्य ने जो अपने महानुशासन में आदेश किया है वह गुरुदेव में स्वभावतः चरितार्थ होता था। महाराज श्री के सद्गुणों का लेखा, उनके स्वरूप का वर्णन, उनके उपदेशों के एक-एक शब्द के अपूर्व आकर्षण आदि का उल्लेख परमानन्द का विषय है। गुरुदेव पर अनेक लेख और ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं, और आगे भी लिखे जाते रहेंगे।

विक्रम संवत् 1928 के मार्गशीर्ष मास की शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को अयोध्या प्रान्त में पवित्र सरयू के निकट गाना ग्राम के सम्मानित सरयूपारीण पंक्तिपावन मिश्र ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर महाराज श्री ने 9 वर्ष की सुकोमल अवस्था में ही हिमालय में तपश्चर्या करने के लक्ष्य से गृह त्याग कर दिया और सीधे उत्तराखण्ड चले गये। वहाँ उत्तरकाशी में श्रृंगेरी पीठ के सन्यासी शिष्य योगनिष्ठ परम तपस्वी बाल ब्रह्मचारी दण्डी स्वामी महात्मा श्री कृष्णानन्द सरस्वती जी महाराज से अखण्ड ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर उन्ही के समीप रहकर 25 वर्ष की अवस्था तक तपश्चर्या पूर्वक शास्त्राध्ययन एवं योगाभ्यास पूर्ण किया। आत्मनिष्ठ होकर हिमालय से उतरे और मध्य भारत की तपोभूमि विन्ध्यगिरि और अमरकण्टक के निर्जन घनघोर वनों पर्वतों में स्वच्छन्द निवास और विचरण करने लगे।

महाराजश्री ने अपने जीवन में सदैव वैदिक मर्यादा की रक्षा की अथवा यों कहें कि वैदिक मर्यादा के बन्धनों से अपने को बांध कर विरक्त जीवन में वे सदा अपनी रक्षा करते रहे। 36 वर्ष की अवस्था में गुरु जी से प्रयाग में त्रिवेणी संगम पर सन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर दण्ड ग्रहण किया और उसके बाद भी उसी प्रकार एकांतिक जीवन व्यतीत करते रहे। अन्त में संवत् 1998 (सन् 1941) में ज्योतिष्पीठ पर पदार्पण किया। आपके द्वारा बताये गये सिद्धान्त जीवन के परम अनुभूत सिद्धांत हैं।

आपके स्वभाव में कोमलता, सरलता, क्षमा, दया, व्यावहारिक कार्यों के प्रति उदासीनता, परन्तु साथ ही साथ दृढ़ता भी थी। जो आपके निकट सम्पर्क में आता था, वह यही समझता था कि सबसे अधिक महाराज श्री मुझे ही मानते हैं। आपकी यह विशेषता थी कि जो समीप में आता था वह मुग्ध होकर ही जाता था। आपके शब्दों में महान् आकर्षण था। आपके प्रवचनों में संगीत से अधिक माधुर्य का अनुभव होता था। आपके उपदेश हृदय स्पर्शी होते थे। जब कोई कुछ प्रश्न कर देता था तो उस प्रश्न का उत्तर देते हुए समीपस्थ सभी लोगों की मानसिक शंकाओं का समाधान बिना पूछे ही कर देते थे। अगणित चमत्कार पूर्ण विशेषताओं से आपका व्यक्तित्व परिपूर्ण था। आपकी स्मरण शक्ति इतनी विलक्षण थी कि चालीस पचास वर्ष पहले की बातों का ऐसा स्पष्ट वर्णन करते थे कि लोगों के नाम, ग्राम आदि तक का विवरण कर डालते थे।

गुरुदेव के परम् प्रिय शिष्य और विश्व विख्यात महर्षि महेश योगी जी ने लिखा है कि ''महाराजश्री के सिद्धि सम्पन्न महान् व्यक्तित्व का इस प्रकार वर्णन करना उनकी अपरिमित शक्तियों को सीमित दृष्टि से देखना है। यह उनके प्रति अन्याय है। वास्तव में जो वाणी के परे का विषय है उसे शब्दों में उतारने का प्रयास अनाधिकार चेष्टा ही है। श्री चरण का व्यक्तित्व ऐसा ही अवर्णनीय व्यक्तित्व है। महात्मा लोग जिसे अपना परिचय देते हैं वही उनको कुछ जान सकता है। जिन्हें श्री चरणों ने कुछ अपनाया है वे ही जान सकते हैं कि उनके सम्बन्ध में अभी तक जो साहित्य प्रकाशित हुआ है वह उनका शतांश भी व्यक्त नहीं कर सकता है। बात कुछ ऐसी ही है कि समाधि के पवित्र प्रांगण में ही इस महान् दिव्य व्यक्तित्व का यथार्थोल्लेख हो सकता है और वहीं बैठ कर यह पढ़ा और समझा जा सकता है।''

ऐसे महान्, दैवी शक्ति से सदा ओज-तेजवान्, विद्वान, साधक, सिद्ध, तपस्वी, दयालु गुरु विरले ही हुए हैं। उनके व्यक्तित्व और कृत्तित्व का जितना गुण गायें, वह कम है। श्री चरण के व्यक्तित्व में जो विलक्षण शान्तिपूर्ण तेजोमय आभा थी, उसके कारण जो एक बार दर्शन कर लेता था वह बार-बार दर्शन करना चाहता था। पूज्यपाद ज्योतिष्पीठाधीश्वर महाराज के श्री मुख से निःसृत शब्दों में विशेष आकर्षण था। कुशल संगीताचार्यों ने कहा है कि इन शब्दों में जो रस है और शब्दावली में जो माधुर्य है वह संगीत, माधुरी को भी विमोहित करने वाला है। श्री चरण के उपदेशों में जो सरलता, सरसता और विषय मार्मिकता थी वह अन्यत्र नहीं पाई गई। आपके अन्तर्यामित्व की कुछ ऐसी विचित्र व्यवस्था थी कि आपके उपदेशों में समीपस्थ जनों के मन की शंकाओं का समाधान बिना ही पूछे हो जाता था। श्री चरण के उपदेश अनुभव की अचल आधारशिला पर प्रतिष्ठित होने के कारण अपूर्व प्रभावशाली होते थे।

श्रीजगद्गुरु महाराज के व्यक्तित्व में प्रत्यक्ष महानता तो थी ही, किन्तु आपकी अनुपस्थिति में भी आपकी विलक्षण सिद्धियों का परिचय जनता को मिला। जिसने कभी आपका कहीं दर्शन किया हो उसने जब भी अपने आपत्ति काल में आपका स्मरण किया उसी समय से उसकी आपत्ति हटने लगी। सैकड़ों श्रद्धालुजन नित्य ही यह प्रयोग कर अपनी आपत्तियों का निराकरण करने लगे। गुरुदेव के प्रताप से बड़े-बड़े नास्तिक आस्तिक हो गये। जिन्होंने कभी किसी देवी-देवता को प्रणाम नहीं किया था, ईश्वर की मान्यता को जो ढोंग समझते थे, वे अपने घरों में नित्य सायं प्रातः श्री महाराज के चित्र की आरती उतारने में गौरव और आनन्द का अनुभव करने लगे। श्री चरण के इस प्रकार के दैवी चमत्कारों से सभी प्रान्तों के मनुष्य हृदय से पीठ के अनुरागी और अनुगामी बन गये।

श्री शंकराचार्य महाराज के पूर्णतया त्यागमय व्यवहार की नीति से नागरिकों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। सबने देखा कि इनके साथ पचासों-सैकड़ों गृहस्थ, विरक्त महात्मा रहते हैं। बड़ी राशि नित्य का खर्च है और ये कभी किसी से द्रव्य स्वीकार नहीं करते। यह कैसे होता है-इस विचार में लोगों की बुद्धि कुण्ठित रह जाती थी और उन्हे महाराज श्री की योगजन्य या तपोजन्य सिद्धियों पर विश्वास करना ही पड़ता था।

इसी से प्रभावित होकर विद्वानों ने महाराज श्री के नाम के आगे अनन्त श्री विभूषित लिखना प्रारम्भ किया। आचार्य

परम्परा में विरुदावली में यह अनन्त श्री विभूषित पद सर्वप्रथम पूज्यपाद स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती महाराज के लिये ही प्रयोग में लाया गया और विद्वानों ने बहुत देख-सुन कर, इसकी चरितार्थता का निश्चय करके ही यह प्रयोग किया। इस प्रकार आचार्य की अपूर्व प्रतिभा से उत्तराम्नाय धर्मपीठ ज्योतिर्मठ-ने सर्वतोभावेन सर्वोच्च प्रतिष्ठा प्राप्त की।

श्री चरण का प्रभाव तो सर्वोपरि था ही, किन्तु आपके अंगरूप आपकी योग्य शिष्य मण्डली ने भी पीठोद्धार के पश्चात् धर्मप्रचार के सम्बन्ध में प्रशंसनीय कार्य किया। अपने परम विरक्त, निर्जन-वन-सेवी व्यवहार से सदा असंग रहने वाले, गुरुदेव को पीठ पर अभिषिक्त देख कर उनके परम विरक्त, संन्यासी, ब्रह्मचारी, शिष्यगण जो अपने गुरु की भांति ही संसार से सदा असंग रहते थे, धर्म-प्रचार हेतु मंच पर आ गये।

देश व्यापी धार्मिक संगठन के उद्देश्य से अखिल भारतीय धर्मसंघ का जन्म हुआ और वह धर्मभेरी जो उत्तर भारत में बज रही थी, अब सम्पूर्ण भारत में प्रतिध्वनित हुई। सर्वकल्याणार्थ, दैवी कृपा द्वारा धर्म शक्ति जागृत करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय धर्मसंघ ने जनता के समक्ष दैवी अनुष्ठानों और यज्ञ महायज्ञों का कार्यक्रम उपस्थित किया। देश का हृदय आस्तिक था। सभी ने यथायोग्य भाग लिया। भारत के इतिहास में यज्ञ-युग दृष्टव्य, ज्योतिर्मठ के धर्म प्रचार कार्य का प्रारम्भ हुआ और सर्वत्र धर्म- भावनाओं की अपूर्व जाग्रति हुई।

ज्योतिष्पीठोद्धार के पश्चात् इतनी शीघ्रता से सम्पूर्ण देश में धार्मिक जाग्रति देखकर विज्ञजनों को पूज्यपाद श्रृंगेरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नृसिंह भारती जी महाराज की चालीस वर्ष पूर्व की गई भविष्यवाणी स्मरण हुई। उन्होंने भारत-धर्म-महामण्डल के अधिष्ठाता पूज्य स्वामी ज्ञानानन्दजी महाराज को बीसवीं सदी के प्रारम्भ में ही लिखा था कि जिस समय उत्तराम्नाय का धर्मपीठ- ज्योतिष्पीठ-जाग्रत होगा उसी समय उसके प्रकाश से समस्त भारत में पुनः धार्मिक जाग्रति होगी। उनकी यह भविष्यवाणी अब प्रत्यक्ष चरितार्थ हुई।

समय, काल अपने प्रभाव में सब कुछ समेट लेता है। 12 वर्ष का समय गुरुदेव के लिये अतिसंक्षिप्त था किन्तु उन्होंने आदिशांकराचार्य की ही भाँति (जिन्होंने अपना सब कार्य केवल 32 वर्ष की आयु में ही पूर्ण कर लिया और समाधिष्ठ हुए) इतने कम समय में धर्म-जागरण, धर्म स्थापना और जन कल्याण के जो कार्य किये उनका दूरगामी प्रभाव आज भी दृष्टिगोचर है और सारे भविष्य में रहेगा।

देश को स्वतंत्र कराने के लिये 10,000 वैदिक पंडितों को एकत्र कर गुरुदेव ने दिल्ली में यमुनातट पर भारतवर्ष की स्वतंत्रता के संकल्प के साथ ''शतमुख कोटि होम महायज्ञ'' करवाया, फलस्वरूप देश स्वतंत्र हुआ।

दिसम्बर सन् 1953 में गुरुदेव स्वामी ब्रह्मानन्द जी ब्रह्मलीन हुए, उनके द्वारा दीक्षित और प्रशस्त मार्ग पर अग्रसर होते हुए लाखों परिवारों की वर्तमान पीढ़ियों के लिए गुरुदेव अब भी चित्र में और हृदयों में जीवन्त हैं और उनकी सैद्धांतिक शिक्षा और प्रयोग आज भी अक्षुण्ण हैं।

गुरुदेव ब्रह्मानन्द सरस्वती जी की इच्छानुसार क्रमशः स्वामी शांतानन्द सरस्वती जी महाराज और स्वामी विष्णु देवानन्द जी महाराज ने ज्योतिर्मठ के धर्म-सिंहासन की मर्यादा का परिपालन किया और गुरुदेव के समस्त आदेशों, कार्यक्रमों और योजनाओं को निरन्तर गति प्रदान की।

वर्तमान में स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज ज्योतिष्पीठाधीश्वर हैं। आप अत्यन्त सरल, सहज, साधनारत, प्रकाण्ड विद्वान, दैवीय कृपा पात्र और दैवीय शक्तियों से परिपूर्ण सिद्धियों सहित ज्योतिर्मठ की मर्यादा का ध्वज सम्हाले हैं और निरन्तर भारत भर में भ्रमण करते हुए वैदिक धर्म की जाग्रति में अहर्निश व्यस्त हैं।

एक तरफ तो गुरुदेव स्वामी ब्रह्मानन्द जी के पीठाधीश्वरों ने गुरुदेव के सद्मार्ग का धर्मानुसरण करते हुए सम्पूर्ण भारत में वैदिक ज्ञान और धर्म की पताका को सदैव ऊँचा उठाये रखा तो दूसरी ओर गुरुदेव के परम शिष्य और उनकी सेवा में रत बाल ब्रह्मचारी महेश इसी धर्म पताका को लिये विश्व भ्रमण पर निकल पड़े। सन्त और वैदिक विद्वानों ने ब्रह्मचारी महेश के ज्ञान स्वरूप व्यक्तित्व, उनकी साधना, सेवा, कर्मठता, विश्व परिवार को शीघ्रातिशीघ्र

ज्ञानी बना देने की तीव्र उत्कण्ठा, विश्व चेतना में सतोगुण की अभिवृद्धि का संकल्प आदि से प्रभावित, उत्साहित और प्रेरित होकर उन्हें महर्षि महेश योगी का सम्मान प्रदान किया। अत्यन्त अल्प समय में ब्रह्मचारी महेश ने सिद्ध कर दिया कि वे वास्तव में महर्षि, महेश और योगी हैं।

महर्षि जी की अपने गुरुदेव के श्रीचरणों में भक्ति अद्वितीय रही। उन्होंने कभी अपने आप को गुरु नहीं कहा, कभी अपनी पूजा नहीं करवायी, कभी किसी सम्मान की इच्छा नहीं रखी, कभी किसी से कुछ मांगा नहीं, केवल देते ही रहे, चाहे वह ज्ञान राशि हो, द्रव्य राशि, ममता या वात्सल्य, सदा ही प्रेम, शांति, सहिष्णुता पूर्ण शिक्षा, पूर्ण स्वास्थ्य, अजेयता, अभय का संदेश और इन सिद्धांतों पर आधारित योजनायें और कार्यक्रम विश्व के 100 से भी अधिक देशों में भ्रमण करके महर्षि महेश योगी जी वैदिक वांग्मय के समस्त 40 क्षेत्रों का ज्ञान और उनमें वर्णित जीवनोपयोगी, हितकारी सिद्धांतों और प्रयोगों को जनमानस को प्रदान करते रहे।

भावातीत ध्यान (Transcendental Meditation) का प्रचार प्रसार सारे विश्व में हुआ और अब तक करोड़ों व्यक्ति किसी न किसी कार्य योजना में महर्षि जी के विश्व व्यापी आन्दोलन से जुड़कर लाभान्वित हुए हैं।

महर्षि जी ने कभी भी अपनी सफलता का श्रेय स्वयं को नहीं दिया। उन्होंने सदा ही शिक्षण के पूर्व, हर कार्यक्रम के शुभारम्भ में अपने गुरुदेव स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी का चरण पूजन किया और अपनी हर सफलता और प्राप्ति को गुरु के चरणों में सादर समर्पित कर दिया। महर्षि जी ने अनेक बार यह बात कही "हम जब चले थे तो हमारे पास केवल गुरुदेव का दिया ज्ञान और आशीर्वाद, दो ही चीजें थी। आज जो भी हमारे पास है यह सब उसी का गुणित फल है"। धन्य है श्री गुरुदेव की अपने शिष्य पर ऐसी महती, असीम कृपा और धन्य है शिष्य महर्षि जी की अपने गुरु के श्रीचरणों में भक्ति। हमारा तो परम सौभाग्य यह है कि हमें ऐसे भक्त महर्षि जी के श्रीचरणों में 25 वर्ष से अधिक सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। 3 जुलाई 2012, आषाढ़ पूर्णिमा को श्री गुरुपूर्णिमा का पावन पर्व है। आइये हम सब श्री गुरुदेव और महर्षि जी के चरणों में अपनी समस्त उपलब्धियॉं, जो उनकी ही उपलब्धियॉं हैं, उन्हें अर्पित करें।

त्वदीय वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पयेत्

अपनी सभी दुर्बलतायें, अपने दुर्गुण, अपने दुष्यकर्म, सभी नकारात्मक विचार व व्यवहार उनके श्रीचरणों के कृपा सागर में विसर्जित कर दें और उनसे इस आशीष की कामना करें:

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मॉ कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।

श्री गुरुपूर्णिमा के इस पर्व पर सम्पूर्ण वैदिक गुरु परम्परा, श्री गुरुदेव ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज और महर्षि जी के श्री चरणों में कोटिशः नमन।

श्री महर्षि वैदिक गुरु परम्परा विजयन्तेतराम् ।

श्री भगवान आदि शंकराचार्य विजयन्तेतराम् ।

श्री गुरुदेव ब्रह्मानन्द सरस्वती विजयन्तेतराम् ।

श्री महर्षि महेश योगी विजयन्तेतराम् ।

जय श्री गुरुदेव

जय महर्षि

## जय महर्षि

जय महर्षि, महर्षि महर्षि
अब ना तुमसा कोई ओर होगा।
दे गया ज्ञान जैसा तू हमको.....
ज्ञान वैसा हमें कौन देगा।
ज्ञान वेदों का तूने उभारा
भावातीत का है सबको सहारा
ध्यान की है सरलतम यह युक्ति
मिलती जीवन को है इससे मुक्ति
साथ वेदों का उसमें ही बोला
दे गया ज्ञान जैसा तू हमको.....
ले लिया तूने संकल्प जैसा
खेल खेला प्रकृति ने ही वैसा
हर तरफ ज्ञान का ही लहरा
हर की चेतना में जगाया तुमने
तुमको पूजे ना जो इस जहॉ में
कौन मानव यहॉ ऐसा होगा
दे गया ज्ञान जैसा तू हमको.....
पुलकित होते अवनि और अम्बर
धन्य माता–पिता और वह घर
धर्म पताका जो तूने फहराई
आया शिवजी का अवतार बनकर
ज्ञान की जो ज्योति जलाई
विश्व पीछे अब उसके चलेगा
दे गया ज्ञान जैसा तू हमको ज्ञान वैसा.....
युग युगांतर में फूल कोइ खिलता
सबको प्रारब्ध कहाँ ऐसा मिलता
दृश्य था वो बहुत ही विहंगम्
प्रयाग तेरा हुआ धन्य संगम
सरिता सरिता सुमन रज है बिखरी
सुरमित उससे यह संसार होगा
दे गया ज्ञान जैसा तू हमको
ज्ञान वैसा हमें कौन देगा
जय महर्षि, महर्षि महर्षि
अब ना तुमसा कोई और होगा।

## वैदिक गीत

गुरुदेव पूज्य का आशीर्वाद
चले हैं लेकर हम सब आज
करने भूतल पर स्वर्ग निर्माण
यही कर्म भूमि हो मेरी
भारत भूमि महान।।
देव गुरु परम्परा का मान
महर्षि वैदिक संस्थान।।
वैदिक विश्व प्रशासन का
हो जाये सपना पूरा
ज्ञान क्रिया से युक्त चेतना
रहे न कोई अधूरा
हृदय वीणा की यही है तान
करें मिल भावातीत ध्यान
देव गुरु परम्परा का मान, महर्षि वैदिक संस्थान।।
है सब सम्भव इसी क्षेत्र में
है गुरुदेव का नारा
पूर्ण ज्ञान की ज्योति जले है
हटे तमोगुण सारा।।
ऋचायें करती यही बखान
जगाओ अपने में पूर्ण ज्ञान
देव गुरु परम्परा का मान, महर्षि वैदिक संस्थान।।
सतोगुणी हो विश्व हमारा
यही कामना मेरी
व्यष्टि व्यष्टि जगे समष्टि
तब हो साधना पूरी
यही देवों का है आव्हान्
इसी में विश्व का है कल्याण
देव गुरु परम्परा का मान, महर्षि वैदिक संस्थान।।
शिवम् शांतम् अद्वैतम् चर्तुथम
शांति रूप हो जाये
ज्ञान प्रकाश फैला आनंद से
यही वेदों का कहै विधान
प्रकृति का यही छुपा संविधान
देव गुरु का मान, महर्षि वैदिक संस्थान।।

गिरीश कुमार शर्मा
ध्यान शिक्षक

# PREVENTION WING

Maj. Gen. Dr. Kulwant Singh (Retd.)
Minister of Invincible Defence-Maharishi Global Country of World Peace
Director General-Maharishi Invincible Defence Programme-India

## PREVENTION WING

*"If a small percentage of military is taken out of the usual military training and is trained in my Vedic Technology of Yogic Flying, they will serve as the PREVENTION WING of the military and will avert the danger of war. The Vedic Principle of prevention is:*

**हेयं दुःखमनागतम्।**

**Heyam duhkham anāgatam.**

*Avert the danger before it arises.*

***–His Holiness Maharishi Ji***

Prevention is the easiest and most cost effective way to avoid war. The future wars, due to easily availability of weapons of mass destruction, are going to be devastating for attacker as well as defender; it will definitely assure mutual destruction of both. If that be so, must we continue to hang on to the old failed methods of resolving our disputes by senseless destruction? Obviously, we need a peaceful way to reduce and finally end the conflicts which leads to war and killing. To get to the correct answer, we must look into the reasons that cause the conflicts between nations and within the nation.

As per modern thinking, the reasons for war, violence, and terrorism – in fact all kind of violence is due to boundary disputes, ethnic's differences, super power rivalry, economic reasons, religious fundamentalism and so on. This feeling is derived from the causes of war and violence as we perceive them. However, according to ancient Vedic thinking, these are peripheral reasons. Actual cause for war and violence is the accumulated stress in the society. Therefore, if we want to eradicate wars and conflicts for ever, we need a different approach – an approach which reduces the stress in human beings, and also collectively in the society. To do this we do not need weapon and armies. There are well tried out Vedic practices which can end all types of violence, in fact all types of negativity. Prevention Wing in the military, which we are proposing, uses Maharishi Ji's Unified Field Based Approach to Defence – a proven, practical and most cost effective approach validated by more than 50 applications and 23 studies publishes in leading scientific journals. These studies are backed by more than 600 other published studies conducted at 215 independent universities and reputed research institutions in 35 countries on individual and societal benefits of this Vedic Technology of Consciousness.

Regular practice of TM has been shown to dissolve deep rooted stress in the individuals which ensures holistic improvement in the functioning of complete human physiology. When practiced collectively in groups, the same programme effectively reduces social stress and tension which in turn reduces the crime and violence. This happens due to increased coherence which can spread to far of places, including enemy territory across the borders, by the well known phenomenon in physics – 'Field Effect'. When practiced in large groups of several hundreds to several thousands by trained experts, the resultant coherence, within our boundary and across the land of adversaries, quickly neutralizes acute societal stress that fuel violence; conflicts and wars are averted as tensions

are calmed reducing enmity in an adversary.

We know from the various experiments, which are well authenticated and documented that when 1% of population of any society practices Transcendental Meditation (TM), the coherence is spread removing all the negative elements from the society. We also know that when Square Root of 1% of population practices TM-Siddhi, an advance practice of TM, the same results are achieved thou the number of practitioners are drastically reduced. In training and organising Prevention Wing for the army, we use the principle of Square Root of1% formula. Maharishi Ji successfully demonstrated this formula at global level with 7000 Yogic Flyers, (the Square Root of world population then) the worldwide events showed marked decline in negativity, simultaneously the positivity had increased in almost all spheres.

We do not need large number of soldiers for the Prevention Wing, - 2 to 3% of a field force, if trained, can achieve the purpose. These soldiers could be from the reserve formations, readily available to the force commander, if required. They will do all the duties which the troops do in combat, in addition, they will collectively practice TM-Sidhi programme collectively in the morning and in the evening, at a quiet place in the rear areas.

Let us take the example of a Field Formation with strength of 60000 troops (almost of Corps strength, comprising of three Divisions). Working on approximate 2 to 3% needed for the Prevention Wing, our requirement works out to about 1500 troops. Usually, one third of any combat force remains in reserve, placed somewhat in the rear areas to be used when the opportunity arises. In this case the reserve force would be approximately 20000 troops, one Division out of three. Only 1500 soldiers out of this reserve are required to be trained as Yogic Fliers, experts in TM- Sidhi programme. If there is a Field Army of three Corps operating, then each Corps can have its own Prevention Wing located within its boundary. Thus, the total strength of all three Prevention Wings will be 4500 Yogic Flyers; indeed a powerful number to create a strong coherence over a large area.

This Prevention Wing does not cause any financial burden and also does not reduce the fighting capability; when required these troops can be used for combat, like any other reserve. Prevention Wing acts as a very powerful weapon; a great force multiplier, consistent coherent producing element. Besides tremendous benefits to the individual soldiers, it will defuse enmity in a potential adversary. Army is meant to protect the borders of a nation. A better strategy will be to prevent enemy reaching our borders, still better is to eliminate the enmity in the enemy – stop the birth of an enemy. If this could be achieved the war will not be needed.

# GURU–The Eternal Element

Prof. Bhuvnesh Sharma
Vice Chancellor-Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya, Madhya Pradesh

Guru is an eternal element of the absolute being, the Almighty Nature and Gurudev is the manifested incarnation of that element. Guru is the life on Earth and beyond. One of the names of Guru in Devnagri is "Jeev" (जीव) that is the life itself. Guru is Creater, Maintainer, and Balancer of life, that is why Guru is Brahma, Vishnu, and Mahesh and is not just those Devtas but it is the Absolute Reality "The Brahma". Guru enlivens the Total Knowledge, basically the Supreme Knowledge. The knowledge and experience of self i.e. Adhyatmic Knowledge besides the Adhidevik and Adhibhoutik knowledge. Shrimad Bhagwad Gita expounds that Adhyatmic Knowledge is the supreme "अध्यात्म विद्या विद्यानां" amongst all knowledge.

Guru gives the complete knowledge and experience of both the manifest and un-manifest. All the Devtas are not seen in manifested form but Guru has physical manifest form making it easier to realize the unseen reality. Through the form realizing the formless. Guru is both the Veda and Vedanta. Lotus feet of Gurudev represent the point value as well as the infinity, being eternal element of nature, encompassing and converging infinity to a point making it easy to access for everyone who comes to shelter. Guru is represented by the planet Guru in manifest form in creation. In Vedanga Jyotish Guru is the most benefic planet, another name of Guru is सुधादृष्टि i.e. Guru's aspect or blessing is like Nectar of life, which is true in Jyotish as well. Guru leads to liberation from bondage of life and even the bondages are used to help achieve liberation enjoying the boundless within boundaries. Guru takes away or dissolves all the negative influences from the lives of individual and so is called ग्रह पीड़ापहारक i.e. removing the negative influence of planets.

Guru not just takes away the negativity but also enables to achieve or fulfill the desires अभिष्टफलदायकम् giver of the desired objectives. Guru is Jagad Guru because he is not just enjoying the bliss within himself but helps others to enjoy the same and bringing Knowledge, Power and Bliss for the individual and whole world. Parents and the Guru are the only human beings, who enjoy the success of their children or disciples. Even Devtas pray to Guru. Guru is the Knower of reality, Knower of everything i.e. सर्वज्ञ All knowingness. The planet Guru represents Guru element in nature and is the supreme benefactor bringing all the good to everyone. Guru gives the real Sukh, Comfort, happiness in life because Happiness or Sukh is not in limitations but is in the limitlessness, unboundedness, infinity which is one's own Self ना अल्पे सुखम अस्ति यो वे भूमा तत सुखम्।

Guru is called the grand-father of physicians (Vaidya ) which is evident as Ayurveda, is Upveda (First manifestation of Veda ) and Guru is Veda and Vedanta-incarnate, showing the emergence of Ayurveda from Guru.

We can appreciate all the attributes of Guru because we are fortunate to have the blessings of Holy Tradition of Vedic Masters, and Sri Gurudev through Poojya Maharishi Ji who has given the complete Vedic knowledge to us like an Amala (small fruit having almost all the tastes) at our palm हस्तामलकवत Proving that Vedic Knowledge is not just a philosophy but the Supreme Technology of life giving complete command of our life to our-selves and also that of the whole cosmic life. Poojya Maharishi Ji enlivened the Infinite Knowledge, Supreme Knowledge even through the limited approach of Modern science proving the Supreme value of Vedic Knowledge to the whole world.

Guru also is the guiding light for upholding Dharma in life, advising the actions which will bring support of nature to help get success in all fields of life and help the individual to achieve Dharma (Action in accordance with the laws of nature), Arth (Financial Success), Kam (Fulfillment of all desires),

Moksha (Enlightenment).

Guru is the abode of speech, Master of speech (Vaakpati) and has the ability to destroy the doubts and satisfied with answers to questions of the disciple even without uttering a word गुरॉस्तु मौन व्याख्यानं शिष्मास्तु छिन्न संशयः। need aa ki matra in vyakhyanam

Guru is called Bhedateet भेदातीत the one who unfolds the hidden, unmanifest reality of life. Perfection of Vedic Knowledge is verifiable and true through any aspect or discipline of Vedic Science, for an example, every year Shree Guru Poornima is celebrated when Chandra (Moon) is in Dhanu the Mool Trikona Rashi of Guru (representing Guru) and Surya (Sun) in Mithun Rashi.

Here Surya is the Lord of ninth house the house of Dharma (Action in accordance with the laws of nature) aspecting the Moon in Dhanu Lagna proving that Guru is abode of Dharma. Also Moon being the lord of eighth house the house of hidden things representing Transcendence brings transcendence to shine fully, Moon being full is indicating Guru unfolds the unseen to its full manifest value and is incarnate of Vedanta. Guru represents both the fullnesses, fullness of Atma (Surya) and Mana (Moon).

We are all fortunate in the present generation to have the blessings of Poojya Maharishi Ji, The embodiment of all the great qualities known of Guru. Poojya Maharishi Ji was performing Guru Poojan till he became one with Guru (Brahmleen). Poojya Maharishi Ji explained, applied and enlivened, the Unified Field of all the Laws of Nature in Atma-self of everyone.

By listening and knowing about the Guru all the sins or effect of evil Karmas are washed away.

Without knowing the Guru element all the knowledge of Veda and different Vedic literature has no meaning or value.

Everyday remembering the glory of Guru, the qualities of Guru, enlivens the consciousness of the individual. Poojya Maharishi Ji was the living example of becoming the greatest Guru by performing Guru poojan (Offering to Guru) all his life in all parts of the world.

If we can do even a little justice to ourselves by bringing the knowledge given to us by Poojya Maharishi Ji to as many people as possible, then there is no doubt about our complete fulfillment in our lives. Guru's blessings, attributes, and glory are unlimited and it is not possible to narrate them in limited words but it is always a joy to sing the glory of Guru enjoying the limitless in limits. It can only be summed up in----

Jai Guru Dev, All Glory to Shri Guru Dev

Mahairishi Vedic Guru Parampara Vijayantetaram

Shri Guru Dev Brahmanand Saraswati Ji Vijayantetaram

Shri Maharishi Mahesh Yogi ji Vijayantetaram.

Bowing to The Lotus feet of Shri Guru Dev

# Raja Harris Kaplan
# Raja of Invincible India

Dear E-Gyan,

The growing support reported in our newsletter of May 2 is going hand in hand with an expanding circle of people who are aware of the gift of perpetual peace that Maharishi Ji offered to the world.

As part of that broadened outreach, Arlene and I wanted to summarize for you the rays of sunshine brightening the Indo-American and Indo-Canadian communities from the recent tour by Maharaja Adhiraj Rajaraam, the first sovereign ruler of Maharishi Global Country of World Peace.

In the past six weeks, Maharaja led the highly successful New Paradigm Tour of 10 North American cities. Raja John Hagelin and Dr. Ramani Ayer, Chair of our Development Council, joined Maharaja in deeply inspiring the Indo-American and Indo-Canadian communities with Maharishi's vision of Veda, Consciousness, and the Self.

Maharaja held audiences in rapt attention with his explanation of how every aspect and nuance, gross and subtle, of the Vedic epic, the Ramayana, is intimately correlated with the actual structure and functioning of our human physiology.

Raja John and Ramani Ayer explained the scientific basis and practical programs of Maharishi Vedic Science, especially the power of Maharishi Vedic Pandits to create peace in our world.

The response to the presentations was consistently and overwhelmingly enthusiastic. The number of attendees at most venues doubled or tripled our expectations. In all, nearly 4,000 Indo-Americans and Indo-Canadians attended Tour events, including 600 at three events either hosted by or facilitated by local chapters of the American Association of Physicians of Indian Origin.

They were very moved to learn of all Maharishi had done to revive Vedic science and quite stunned to learn that there are already almost 1,000 Maharishi Vedic Pandits in the US in addition to the more than 6,000 in India, who are either Maharishi Vedic Pandits in the Brahmsthan, or at Prayag or students enrolled in Pandit training elsewhere around the country

Throughout the tour, we kept hearing the same comments: "We feel so proud of our Vedic tradition!"; "We never knew!" and "Now we must help create peace with you!".

At the event in Chicago, which was attended by over 800 people, The David Lynch Foundation's video crew professionally filmed the entire event. Our team is using that footage to create a new video on Veda and the Global Peace Initiative that will be publicized as a webinar worldwide. This should significantly help the Foundation's global outreach, especially to people of Indian origin.

This recent outreach is part of what, we hope, will prove to be a systematic and successful march to our initial goal of having 3,500 and then 9,000 Maharishi Vedic Pandits at the Brahmsthan of India. It is moving in that direction now and with your continuing support, we will reach our common goal.

With best wishes,

**Jai Guru Dev**

Raja Harris Kaplan
Arlene Kaplan

# गुरु गीता ज्ञान

डॉ. निलिम्प त्रिपाठी, आचार्य, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, मध्यप्रदेश

श्रीकृष्ण द्वैपायन वेद व्यास जी ने अनेक पुराणों की रचना की है। स्कन्दपुराण के उत्तरखण्ड में शिव–पार्वती के गूढ़ संवादों में गुरु महिमा का रहस्योद्घाटन होता है। जो साधक केवल गुरु वचनों का ही अनन्य साधन करता है, वह स्वयं गुरुत्व को प्राप्त हो जाता है। सम्भवतः इसीलिये गुरु की उपमा पारस मणि से नहीं की जाती क्योंकि पारस लोहे को केवल सोना बनाता है किन्तु गुरु तो शिष्य को ही गुरुता प्रदान कर देते हैं। 'जानत तुम्हहिं तुम्हहिं होई जाई'। सूखे शास्त्र याद करने से या तर्क–वितर्क करने पर आत्मज्ञान प्राप्त नहीं होता वह तो केवल गुरु सन्निधि से ही मिलता है।

न शास्त्रात् प्राप्यते ज्ञानं न तु तर्कवितर्कनात्।
प्राप्यतेऽध्यात्मज्ञानं तु केवलं गुरुसेवनात्।।

साधक का मन तत्व ज्ञान के लिये विह्वल रहता है। क्या करें, कहाँ जाये, किससे पूँछें, कौन मिलेगा इत्यादि प्रश्नों से मन व्यथित होता रहता है। बार–बार विचार पूर्वक ध्यान करते रहने से साधक, शिष्यत्व को प्राप्त होता है।

सत्य ही है कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी इस संसार की उत्पत्ति, पालन एवं संहार में केवल गुरु सेवा के प्रसाद से ही समर्थ हुए हैं।

गुरोः कृपाप्रसादेन ब्रह्मविष्णुसदाशिवाः
समर्थाः प्रभवादौ च केवलं गुरुसेवया।। गुरुगीता–83

तत्वोपदेश देते हुये स्वयं महादेव पार्वती जी से कहते हैं कि हे महादेवी पार्वती ध्यान पूर्वक सुनिए! गुरु का ध्यान सभी आनंद को देने वाला होता है और सभी सुखों का प्रदाता होता है। भोग सहित मोक्ष को भी प्रदान करने वाला है।

ध्यानं शृणुं महादेवि सर्वानन्दप्रदायकम्
सर्वसौख्यकरं नित्यं भुक्तिमुक्तिविधायकम्।। गुरुगीता–87

गुरु को जितना स्मरण करेंगे उतना ही चित्त निर्मल होगा। प्रसन्नता रहेगी। मन निश्चल रहेगा तथा पवित्रता आएगी। हमारा निर्माण करने वाले ब्रह्म स्वरूप गुरुदेव को स्मरण, नमन करते हुये भजन पूर्वक बोलना वाणी की सिद्धि का हेतु है।

श्रीमत्परब्रह्म गुरुं स्मरामि,
श्रीमत्परब्रह्म गुरुं वदामि।
श्रीमत्परब्रह्म गुरुं नमामिः,
श्रीमत्परब्रह्म गुरुं भजामि। गुरुगीता–88

यह ज्ञान परम्परा अति प्राचीन है। भगवान शंकराचार्य ने इस उदात्त धारा को व्यवस्थित किया है। इस शांकरी परम्परा में स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती और उनके शिष्य पूज्य महर्षि महेश योगी जी की कीर्ति विश्वविख्यात है। जिन्होंने अपने गुरु को ही अपना सर्वस्व न्यौछावर कर सम्पूर्ण संसार में गुरु पूजा को ही ध्यान और पूर्णता का मूल बताया है। हम इस गुरु ज्ञान परम्परा के लिए कृतज्ञता अर्पित करते हैं।

# महर्षि ज्योतिष की दृष्टि में जुलाई माह

पंड़ित हरिशरण मिश्र (ज्योतिषाचार्य)

जुलाई माह आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वादशी दिन रविवार से प्रारम्भ होकर श्रावण शुक्ल पक्ष त्रयोदशी दिन मंगलवार पर्यन्त रहेगा।

इस माह में पड़ने वाले विशिष्ट पर्व एवं त्यौहारों का माहात्म्य निम्नांकित है–

1. वामन पूजन– आषाढ़ शुक्ल द्वादशी को वामन भगवान का पूजन करके व्रत रखना चाहिये। इससे एक यज्ञ करने के समान पुण्य फल प्राप्त होता है। इसका विधान यह है कि यदि सम्भव हो तो सुवर्ण या ताम्र की मूर्ति वामन भगवान की बनवा ले, तदोपरान्त तुलसी पत्र का आसन बनाकर ताम्रपात्र में बिठाकर षोडशोपचार पूजन एवं आरती करें।

यदि मूर्ति न बनवा सकें तो शालिग्राम भगवान की ही पूजा कर लेनी चाहिये। इससे वामन पूजन का ही फल प्राप्त होता है।

2. आषाढ़ पूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा– आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा या व्यासपूजा पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन प्रातः स्नानादिक क्रिया से निवृत होकर एक काष्ठ की चौकी पर सफेद कपड़ा बिछाकर उसमें बारह खाना गन्धादि से बनाकर व्यास पीठ निश्चित करें, फिर दिक् बन्धन करके भगवान विष्णु, ब्रह्मा, वशिष्ट जी, पराशर व्यास, शुक्रदेव, और शंकराचार्य भगवान व सम्पूर्ण गुरु परम्परा का नाम मंत्र से आवाह्न करके अपने दीक्षा गुरु के सहित देव तुल्य षोडशोपचार पूजन करना चाहिये, फिर पुष्पांजलि देकर प्रार्थना करनी चाहिये। ऐसा करने से गुरु परम्परा की सिद्धि होती है। अर्थात भगवान नारायण का प्रतिबिम्ब परम्परागत से व्यक्ति को प्राप्त होता है, तब व्यक्ति स्वंय सर्व समर्थ सत्तावान बनता है।

3. नाग पंचमी व्रत– यह व्रत श्रावण शुक्ल पंचमी को किया जाता है। लोकाचार या देश–भेद वश गुजरात इत्यादि में यह कृष्ण पक्ष की पंचमी को भी मनाया जाता है। इसमें पर विद्धा पंचमी ग्रहण की जाती है। इस दिन सर्पों की पूजा करने का विधान शास्त्रों में वर्णित है।

अतः गाय के गोबर से घर की दीवार पर सर्पों की आकृति बनाकर दूध, दही, गंगा जल इत्यादि से स्नान कराकर गन्ध, अक्षत, धूप, दीप करना चाहिये, फिर मोदक, मालपुआ का नैवेद्य सर्पों को अर्पण करना चाहिये, ऐसा करने से साल भर के लिये घर में सर्पों का भय नहीं रहता।

4. पुत्रदा एकादशी– श्रावण शुक्ल पक्ष की एकादशी को पुत्रदा पवित्रा एवं पाप नाशिनी नाम से जाना जाता है। इस एकादशी को व्रत रखकर भगवान विष्णु का षोडशोपचार पूजन करना चाहिये तथा अनेक प्रकार के फल पत्र, पुष्प और नैवेद्य भगवान को अर्पण करना चाहिये, फिर आरती करके, रात्रि जागरण एवं गायन, वादन, कीर्तन और कथा श्रवण करना चाहिये। ऐसा करने से पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

**जुलाई माह में पड़ने वाले व्रत–पर्व एवं त्यौहारों की तालिका इस प्रकार है**

| क्रमांक | व्रत एवं पर्व का नाम | मास | पक्ष | तिथि | दिनांक |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | प्रदोष व्रत | आषाढ़ | शुक्ल | द्वादशी | 01.07.2012 |
| 2. | वामन पूजन | आषाढ़ | शुक्ल | द्वादशी | 01.07.2012 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 3. | आषाढ़ पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा) | आषाढ़ | शुक्ल | पूर्णिमा | 03.07.2012 |
| 4. | नित्य नैमित्तिक पार्थिवार्चन | श्रावण | कृष्ण | प्रतिपदा | 04.07.2012 |
| 5. | अमून्य शयन द्वितीया व्रत | श्रावण | कृष्ण | द्वितीया | 05.07.2012 |
| 6. | संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत | श्रावण | कृष्ण | चतुर्थी | 07.07.2012 |
| 7. | श्रावण सोमवार व्रत | श्रावण | कृष्ण | षष्ठी | 09.07.2012 |
| 8. | कालाष्टमी व्रत | श्रावण | कृष्ण | अष्टमी | 11.07.2012 |
| 9. | कामदा एकादशी व्रत | श्रावण | कृष्ण | एकादशी | 14.07.2012 |
| 10. | सोम प्रदोष, श्रावण सोमवार व्रत | श्रावण | कृष्ण | त्रयोदशी | 16.07.2012 |
| 11. | मास शिवरात्रि व्रत | श्रावण | कृष्ण | त्रयोदशी | 17.07.2012 |
| 12. | श्रावण अमावस्या | श्रावण | कृष्ण | अमावस्या | 19.07.2012 |
| 13. | मधुश्रवा तृतीया स्वर्ण गौरी व्रत | श्रावण | शुक्ल | तृतीया | 22.07.2012 |
| 14. | वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत | श्रावण | शुक्ल | चतुर्थी | 23.07.2012 |
| 15. | श्रावण सोमवार व्रत, नाग पंचमी व्रत | श्रावण | शुक्ल | चतुर्थी | 23.07.2012 |
| 16. | कल्कि अवतार षष्ठी | श्रावण | शुक्ल | षष्ठी | 24.07.2012 |
| 17. | गोस्वामी तुलसीदास जयंती | श्रावण | शुक्ल | सप्तमी | 25.07.2012 |
| 18. | पुत्रदा एकादशी व्रत | श्रावण | शुक्ल | एकादशी | 29.07.2012 |
| 19. | सोम प्रदोष व्रत, श्रावण सोमवार व्रत | श्रावण | शुक्ल | द्वादशी | 30.07.2012 |

5. पंचक– दिनाँक 07 जुलाई दिन शनिवार को प्रातः 2 बजकर 10 मिनिट से प्रारम्भ होकर दिनाँक 11 जुलाई दिन बुधवार को सांय 07 बजकर 14 मिनिट पर समाप्त होगा।

6. मास प्रभाव– इस माह खाद्य पदार्थों के मूल्य में तेजी आयेगी, तिलहन, दलहन तथा दूध, दही के मूल्य में विशेष तेजी दिखेगी। कहीं–कहीं आँधी एवं तूफान से हानि होगी, अचानक यान दुर्घटनायें घटित होंगी। वर्षा की कमी से कहीं–कहीं जन सामान्य को कष्ट होगा। काष्ठ एवं इमारती लकड़ियां महंगी होंगी। पूर्वोत्तर राज्यों में बाढ़ एवं वर्षा से क्षति होगी।

इन अनेकानेक नकारात्मक प्रवृत्तियों के निवारण के लिये महर्षि भावातीत ध्यान तथा यज्ञ का आश्रय लेना श्रेयस्कर होगा।

"India Growing in Positivity with Rise of Coherence in Collective Consciousness"

## India, Pakistan plan homes for prisoners

The Hindu-Sandeep Joshi

India and Pakistan are planning to set up homes for prisoners on either side of the international borders to house those who have completed their jail term but were yet to be repatriated. They will be run by non-governmental organisations.

"India and Pakistan have decided to set up at least one such home that will be used to keep prisoners who are yet to be repatriated. Even after completion of their jail terms, Pakistani nationals are still languishing in our jails as Pakistan is not willing to accept them as their citizens…to address this issue it has been decided to run such homes where these prisoners will be housed till their nationality and other issues are settled," Home Secretary R.K. Singh told journalists here.

Mr. Singh, who headed the Indian delegation at the second round of Home/Interior Secretary-level bilateral dialogue in Islamabad last week, said this issue was discussed at the meeting and it was decided to rope in NGOs to carry out this job.

## Now students can carry extra luggage on British Airways

The Hindu-Sujay Mehdudia

British Airways on Thursday announced special discounts and various offers for students travelling to the U.K., the U.S., Canada and some European destinations.

According to an official statement issued by the airline here, under the offer, students flying with the carrier between June 1 and October 30, 2012 would be allowed to carry an extra piece of luggage, weighing up to 23 kg. "Students travelling with British Airways this year will receive exclusive assistance to make their entire experience one of ease and comfort," British Airways Regional Commercial Manager (South Asia) Christopher Fordyce said.

The offer is valid for those holding a valid student visa to the U.K., Europe, U.S. or Canada only. The outbound travel must be completed on or before October 30, 2012 originating in Delhi, Mumbai, Bengaluru, Hyderabad or Chennai, the statement said.

## Regulatory framework for foreign varsities, not backdoor entry, UGC says

The Hindu

N. Adil Kazmi, Secretary, University Grants Commission, writes:

Apropos "Government trying 'backdoor' entry for foreign universities" ( The Hindu , June 1, 2012), the University Grants Commission has been seriously engaged in the analysis of the findings of the various reports on foreign education providers operating in the country with regard to the standing of such providers in their respective countries, the nature of programmes offered by them and the degrees awarded, and above all, protection of the interest of students seeking admission to such foreign institutions.

Many foreign educational institutions are operating in the country offering different types of courses and programmes and there is no regulation presently in place to control and curb the operation of such institutions with academic credentials which may not even be satisfying in their own country. The UGC is aware that the AICTE Regulation of 2003 are applicable only for technical and management education but not in the other areas of higher education. The Ministry of Human Resource Development has time and again emphasised the need to put in a regulatory framework for entry and operation of

foreign education providers through a UGC Regulation. This need has also been emphasised by various reports of experts/committees which include the report of the C.N.R. Rao Committee, the Study Report on foreign educational institutions (2007) by the National University of Educational Planning and Administration (NUEPA) and the Report prepared by the Association of Indian Universities (AIU) in 2012.

The impression given by The Hindu story that the UGC is going to permit foreign educational institutions through a 'backdoor' channel is not true. The objective of the UGC is to formulate a regulatory framework which could be put in place on the lines similar to what has been laid down by the AICTE in 2003.

## New science and technology policy to be unveiled this year

The Hindu-Staff Reporter

India will formulate a new science and technology policy this year, updating an earlier document, Prime Minister Manmohan Singh announced recently.

"Over the course of the year, we hope to formulate a new science and technology policy that will update the existing policy document of 2003, in the light of the rapidly changing scientific environment of the country and the world," he said at the inception ceremony of the centenary session of the Indian Science Congress Association (ISCA).

Dr. Singh, the first Prime Minister to be appointed general president of the ISCA for 2012-13, expressed the hope that scientists would use the centenary year events to reflect on "how we can frame the science and technology policy that reflects our aspiration for making science a spearhead of development in our country." "We have to keep pace with what is happening elsewhere in the scientific world, and the evolving aspirations of the Indian people."

The Union government had taken a "quantum leap" in its ambitions for Indian science, he said. His government had invested like never before in science.

Admitting that he was touched by the gesture of the ISCA council members to appoint him the president, Dr. Singh said his acceptance of the responsibility signaled the government's total support and commitment to Indian science as it passed through a critical decade of innovation.

## India supports global funding of health R&D for poor

The Hindu-Aarti Dhar

*WHO panel proposed treaty requires all governments to share cost*

India supports a proposed legally binding global instrument that requires all governments to share the cost of research and development (R&D). The treaty, recommended by a World Health Organisation panel, will boost access to countries least able to pay for medical innovations but need it most. This would also delink profits from medical discoveries.

## Economy set on higher growth trajectory

The Hindu-Ashok Dasgupta

Move to kick-start infrastructure projects

Jolted into action following the country's GDP growth plunging to a nine-year low of 5.3 per cent during the fourth quarter of 2011-12, the government on Wednesday decided to set in motion a host of measures to kick-start key infrastructure development projects and thereby provide a catalyst to revert the economy to a higher growth trajectory.

At a meeting held by Prime Minister Manmohan Singh to finalise the infrastructure sector targets for the current fiscal, investment allocations were sought to be almost doubled for a number of key segments such as ports and shipping, roads, airports, and railways. The quantum jump in investment targets in these sectors, with the aid of private sector participation, is expected to provide a massive boost to manufacturing activity in allied sectors in a scenario when the economy is faced with turbulent times.

# Maharishi Movement Global News

## Paralympic medalist Daniel Westley relies on Transcendental Meditation to ease training pressures

Daniel Westley is a Canadian athlete who won 12 medals while competing in five Paralympic Games--four of which were gold. Westley says he relied on his daily practice of the Transcendental Meditation Technique to help him compete in the Paralympics, a biennial event run in parallel with the Olympic Games for elite athletes with a physical disability. He also says that the positive influence of the TM program has extended far beyond sports.

## How India can have an invincible

India's leaders have the opportunity to make history. They can become the first Asian leaders to achieve invincible peace--eliminating the possibility of terrorism, conflict, and war--by implementing Invincible Defence Technology (IDT), state Maj. Gen. Kulwant Singh, UYSM, Indian Army (Retd.), and Dr. David Leffler recently in Newswing. The authors make a compelling case for how 'leaders in India could make their mark if they adopt this most ideal defense system. The implementation of IDT would become a turning point in the history of India's national defense, and India would lead the world into perpetual peace.'

## How Nepal can have an invincible

National leaders today have the option to consider and adopt a new, surprising, and scientifically verified method to eliminate the underlying cause of terrorism, war and all types of violence--collective social stress. This method, called Invincible Defense Technology (IDT), has absolutely nothing to do with bullets, bombs, or killing. In fact, it has the potential to diminish the role of these concepts in the consideration of national security. IDT is a scientifically field-tested, "brain-based technology" to reduce societal stress and prevent crime, terrorism, and war.

## Teachers, students, and parents all love this school

Maharishi Free School in England is fulfilling the government's purpose in creating Free Schools not only through its outstanding academic success, but through its happy, harmonious students who have a true love of life. Ofsted, a respected government evaluation report, characterizes Maharishi Free School as 'a high performance school that really cares for children'.

## Vastu architecture and Maharishi Garden Cities stir new interest among builders, public

The booth displaying Maharishi Vastu architectural design and city planning drew many builders, developers, and members of the public attending the recent large Ecobuild exhibition in London. The Album of Events page of Global Good News shows some of the displays that presented the comprehensive design approach for a harmonious, life-supporting living environment offered by this most ancient and complete system of building in harmony with natural law. Visitors were especially fascinated to see how these principles are being put into practice in actual homes in the beautiful and thriving Maharishi Garden Village development in Rendlesham, Suffolk, England.

## Maharishi University of Management proud to host 'one of the most comprehensive online Sanskrit libraries'

Vice President of Maharishi University of Management Dr Craig Pearson spoke proudly of Dr Peter Freund and his PhD work related to Sanskrit and Vedic Literature. 'As part of his doctoral research, he essentially put the entire Vedic literature online. More precisely, he put online the world's most comprehensive and orderly collection of Vedic literature that's written in Sanskrit Devanagari script.'

## Watch online! National Summit on "Resilience, the Brain, and Meditation"

Military leaders and medical researchers promote Transcendental Meditation for resilience and health: Can the simple, stress-reducing Transcendental Meditation Technique help returning veterans overcome the terrible epidemic of post-traumatic stress (PTS), a disabling psychological wound which afflicts as many as 300,000 young men and women? Can it also help protect young officers-in-training against the dangers posed by combat and operational stress?

# News Clippings

## परीक्षा परिणाम में महर्षि का रहा दबदबा

### एमवीएम के हिमांशु ने किया जिला टॉप

बागेश्वर : सीबीएसई की इंटर परीक्षा में महर्षि विद्या मंदिर बागेश्वर के परीक्षार्थियों का दबदबा रहा। एमवीएम के 40 बच्चों ने इंटर की परीक्षा दी थी जिसमें से 37 बच्चे उत्तीर्ण हुए। विद्यालय की इस सफलता पर प्रधानाचार्य रेखा धामी ने खुशी जताते हुए कहा कि शिक्षकों व अभिभावकों की मेहनत से ही सफलता मिली है। कहा कि विद्यालय का परीक्षाफल 92.5 प्रतिशत रहा। हिमांशु परिहार ने जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इधर कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल का इंटर का परीक्षाफल 97.5 प्रतिशत रहा। विद्यालय की प्रधानाचार्य डा आशा तिवारी व प्रबंधक एनबी भट्ट ने बताया कि 85 प्रतिशत अंकों के साथ अपूर्वा नगरकोटी ने विद्यालय टाप किया। केशा मेहता ने 83.6 प्रतिशत अंकों के साथ दूसरा स्थान प्राप्त किया। पूजा पांडे ने 81.8 प्रतिशत अंक हासिल कर विद्यालय में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। वैशाली के पिता चंद्रप्रकाश मिश्रा राइंका हड़बाड़ में गणित के प्रवक्ता हैं तथा माता चंद्रप्रभा मिश्रा भी शिक्षिका हैं। वैशाली ने इस सफलता का श्रेय माता पिता व शिक्षकों को दिया।

### इंजीनियर बनना चाहती हैं हिमानी

बागेश्वर : महर्षि विद्या मंदिर की इंटर की छात्रा हिमानी माजिला ने एयरो स्पेश इंजीनियर बनकर देश सेवा करने की इच्छा जताई है। हिमानी सीबीएसई परीक्षा मे 79.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय तीसरा स्थान प्राप्त किया है। हिमानी के पिता रमेश माजिला तथा माता नीरा माजिला व्यापारी हैं।

हिमानी माजिला

### इंजीनियर बनना चाहता है हिमांशु

बागेश्वर : महर्षि विद्या मंदिर के छात्र हिमांशु ...

... मनमोहन भाकुनी को दिया।

### आइएएस बनना चाहती हैं अपूर्वा

बागेश्वर : कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल की इंटर की छात्रा अपूर्वा नगरकोटी ने 85 प्रतिशत अंक हासिल कर विद्यालय में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया है। अपूर्वा भविष्य में प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती हैं। अपूर्वा ने इस सफलता का श्रेय पिता राजेंद्र सिंह नगरकोटी सहित माता व शिक्षकों को दिया है।

अपूर्वा नगरकोटी

### इंजीनियर बनना चाहती हैं निकिता

बागेश्वर : कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल की छात्रा निकिता साह ने 81.6 प्रतिशत अंक हासिल कर विद्यालय में तीसरा स्थान प्राप्त किया है। निकिता भविष्य में इंजीनियर बनकर ...

... विद्यालय में चौथा स्थान प्राप्त किया है। लिपिका भविष्य में प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती हैं। लिपिका ने इस सफलता का श्रेय पिता बिजेंद्र प्रसाद व माता विनीता प्रसाद सहित शिक्षकों को दिया है।

### सीए बनना चाहती हैं दीपा

बागेश्वर : कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल की छात्रा दीपा कुमारी ने 71.4 प्रतिशत अंक हासिल किये हैं। वह भविष्य में चार्टड एकाउंटेंट बनना चाहती हैं। दीपा ने इस सफलता का श्रेय पिता सुरेंद्र सिंह व माता सहित शिक्षकों को दिया है।

दीपा कुमारी

... में दक्षता हासिल

## अमित ने आईआईटी में परचम

अमर उजाला ब्यूरो

बेरीनाग/बागेश्वर। विकासखंड के दूरस्थ गांव दौलावलिया के अमित कुमार ने आईआईटी-जेईई प्रवेश परीक्षा में परचम लहराया है। उन्हें ऑल इंडिया रेट में एससी श्रेणी में 411वां स्थान प्राप्त किया है। अमित ने महर्षि विद्या मंदिर बेरीनाग से आठवीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की। हाईस्कूल और इंटर का इम्तिहान ... बागेश्वर से दिया तथा मैरिट में स्थान बनाया। उसके बाद आईआईटी की कोचिंग कोटा (राजस्थान) से की। इस समय अमित का परिवार टी स्टेट बेरीनाग में रहता है। पिता खुशाल राम चावला जीआईसी सिनलेख गंगोलीहाट में प्रवक्ता हैं। मां मंजू चावला गृहणी हैं। कामयाबी का श्रेय ... गुरुजनों को देते हैं। उधर, महर्षि विद्या ... की प्रधानाचार्या रेखा ... कई लोगों ने अमित इस पर खुशी जताई है।

## शहडोल

न्यूज गैलरी

निखिल

पीयूष

शुभायु

## सीबीएसई के मेरिट लिस्ट में महर्षि विद्या मंदिर के 3 छात्र

शहडोल। महर्षि विद्या मंदिर शहडोल में सीबीएसई पाठ्यक्रम में कक्षा 10वीं का रिजल्ट शत् प्रतिशत रहा। विद्यालय के 3 छात्र निखिल बबेरिया पुत्र प्रेम कुमार शिलावत, शुभायु खेड़िया पुत्र किशोर खेड़िया व पीयूष जैन पुत्र प्रभात जैन ने सभी विषयों में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सीबीएसई की मेरिट लिस्ट में अपना स्थान सुनिश्चित किया है और विद्यालय का नाम रोशन किया है। इसके अलावा अंशुल मिश्रा ने 98 प्रतिशत, अतुल त्रिपाठी, तनय खरे व युवराज मिश्रा ने 94 प्रतिशत व विवके शुक्ला ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। इस वर्ष विद्यालय से सभी 64 विद्यार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है जिसमें से 48 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं। विद्यालय परिवार सभी छात्र व छात्राओं को उनके रिजल्ट के लिए ढेर सारी ...



(10 रैंक) (9.4 रैंक) (9.8 रैंक)

सीतापुर के महर्षि विद्या मंदिर में सीबीएसई के परिणाम आने के बाद

## बागेश्वर जिले में हिमांशु रहे अव्वल

महर्षि विद्या मंदिर बिलौना के हिमांशु परिहार ने 91.2 प्रतिशत अंक ...

# Students of Maharishi Vidya Mandir excel in AISEE

**RAIPUR:** THE students of Maharishi Vidya Mandir -I, Tatibandh brought laurels to the institution by performing excellently in the All India Secondary School Examination (AISSE) 2011-12 and Senior School Certificate Examination (SSCE) 2012. According to Principal of Maharishi Vidya Mandir Anisha Sharma, a total of 170 students appeared from the institution in AISSE and the result was 100 per cent. Charu Tripathi topped the list of students by securing 10.0/A+ (CGPA/Grade) followed by Nishchalata Pal (10.0/A+), Prakhar Sharma (10.0/A+), Sidhi Sathe (10.0/A+), Ekta Shukla (09.8/A), Mayank Shrivastava (09.8/A), N V Neelima (09.8/A), Riya Tiwari (09.6/A), Harpreet Kour (09.4/A), Neha Makhija (09.4/A), Aman Jain (09.2/A), Dipanjali Dewangan (09.2/A), Shivam Bilthare (09.2/A), Harsh Vardhan (09.2/A), Mahima Sharma (09.0/A), Ritu Baghel (09.0/A), Sachi Somkurse (09.0/A), Sneha Yadav (09.0/A), Suyash Agrawal (09.0/A), Jaya Rahul (09.0/A) and Shubham Dewangan (09.0/A). Similarly, toppers of the institution in SSCE (Science stream) are Avadh Singhal (91.6 %), Vibhuti Kashyap (89.4 %), Palash Sablok (87%) and Dhanshree Shenwai (83.2%). In Commerce stream, Ninad Sapre topped the examination with 88.6% while A Sai Srinivas was second with 81.8%.

शहडोल

## महर्षि की निकिता जिले की मेरिट में



निकिता जैन

महर्षि विद्या मंदिर शहडोल की छात्रा निकिता जैन ने 12वीं की जिले की मेरिट में प्रथम स्थान अर्जित किया है। निकिता ने 500 में से 463 अंक अर्जित किए है। शहर के अनिल कुमार जैन की पुत्री निकिता जैन अपनी सफलता का श्रेय अपने स्कूल के शिक्षकों, प्राचार्य एवं माता-पिता को दिया है। वह प्रसिद्ध लीगल एडवाइजर बनना चाहती है और आगे की पढ़ाई इसी के लिए ... इसके अलावा स्कूल के 43 विद्यार्थी ... हुए हैं।

दिव्य हिमाचल 14 धर्मशाला, शनिवार, 9 जून, 2012

## शिक्षकों की मेहनत से पहुंचे शिखर पर

कांगड़ा में दसवीं पास होनहारों ने दिया अध्यापकों को श्रेय

कांगड़ा केसरी — शनिवार SATURDAY 9 जून 2012

## रिजल्ट पर स्कूलों में खुशी का माहौल

# News Clippings

**न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं ।**
**शिवशासनतः शिवशासनतः शिवशासनतः शिवशासनतः ।।**

पंडित विजय द्विवेदी (ज्योतिषाचार्य)

आषाढ़ मास की पूर्णिमा 'व्यास पूर्णिमा' तथा 'गुरु पूर्णिमा' के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन गुरु की पूजा की जाती है। गुरु परम्परा की सिद्धि के लिए इस पूजा का आयोजन होता है। सनातन (वैदिक) धर्म की दिव्य गुरु परम्परा के सम्मान में प्रतिवर्ष यह पूजन समारोह सम्पन्न होता है।

**गुरुपरम्परा श्रीमन् नारायण से आरम्भ होती है-**

1. श्रीमन् नारायण 2. पद्मभव ब्रह्मा 3. महर्षि वसिष्ठ 4. महर्षि वसिष्ठ के पुत्र महात्मा शक्ति 5. महात्मा शक्ति के पुत्र महर्षि पराशर 6. महर्षि पराशर के पुत्र भगवान् वेदव्यास 7. भगवान् वेदव्यास के पुत्र श्री शुकदेव जी इसी क्रम में 8. श्री शुक देव जी के शिष्य श्री गौडपादाचार्य 9. श्री गौडपाद जी के शिष्य श्री गोविन्द स्वामी और श्री योगीन्द्र गोविन्द के शिष्य आदि श्री शंकराचार्य जी।। इस परम्परा के दसवें- गुरु आद्य श्री शंकराचार्य जी शिव के अवतार थे। आठ वर्ष की अवस्था में श्री गोविन्दपाद से शिष्यत्व ग्रहण कर संन्यासी हो गये थे। सोलह वर्ष की अवस्था में ब्रह्मसूत्र भाष्य एवं अन्य अनेक ग्रन्थों का प्रणयन, जगद्गुरु शंकराचार्य के पद का सृजन और चार दिशाओं में धार्मिक मठों की स्थापना- पूरब में (जगन्नाथ पुरी में) गोवरर्द्धन पीठ, पश्चिम में (द्वारका में) शारदा पीठ, उत्तर में (वद्रिकाश्रम में) ज्योतिष्पीठ तथा दक्षिण में (श्रृंगेरी में) शंकराचार्य पीठ। सम्पूर्ण भारत का भ्रमण कर उन्होंने शास्त्रार्थ द्वारा सनातन (वैदिक) धर्म की पुष्टि करते हुए राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक अखण्डता को अक्षुण्ण किया। उक्त सभी कार्य को सम्पादित कर 32वर्ष की आयु में मोक्ष प्राप्त करना उनके अलौकिक व्यक्तिव का परिचायक है। आदिजगद्गुरु शंकराचार्य जी के विषय में कहा गया है -

**अष्टवर्षे चतुर्वेदी द्वादशे सर्वशास्त्रवित्।**

**षोडशे कृतवान् भाष्यम् द्वात्रिंशे मुनिरभ्यगात्।।**

अर्थात् - आठ वर्ष की आयु में चारों वेदों में निष्णात हो गए, बारह वर्ष की आयु में सभी शास्त्रों में पारंगत, सोलह वर्ष की आयु में शांकर भाष्य तथा बत्तीस वर्ष की आयु में शरीर त्याग दिया।

उपरोक्त दिव्य गुरुपम्परा में आदि जगद्गुरु शंकराचार्य जी के पश्चात् उनके चार प्रधान शिष्यों का नाम आता है जो इस प्रकार है - 1. पद्मपादाचार्य, 2. हस्तामलकाचार्य, 3. त्रोटकाचार्य और 4. वार्तिककार सुरेश्वराचार्य (पूर्व नाम मण्डन मिश्र) - गुरु पूजन के आरम्भिक आवाहन मन्त्र में दिव्य गुरुपरम्परा के इन 14 गुरुओं का नाम स्मरण किया जाता है। उक्त स्लोक इस प्रकार है-

**नारायणं पद्मभवं वशिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्र-पराशरं च।**

**व्यासं शुकं गौड़पदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।।**

**श्री शङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम्।**

**तं त्रोटकं वार्तिककारमन्यान् अस्मद् गुरून्सन्ततमानतोऽस्मि।।**

इसी गुरु परम्परा के क्रम में, पन्द्रहवां नाम अनन्त श्री विभूषित श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती जी का है जिन्हों ने ज्योतिष्पीठ वदरिकाश्रम के जगद्गुरु शंकराचार्य पद को सुशोभित किया। अलौकिक प्रतिभा के धनी स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती के प्रधान शिष्यों में परम पूज्य महर्षि महेश योगी जी अन्यतम थे। महर्षि जी ने गुरु के नाम और उनकी शिक्षा के प्रचार का व्रत लेकर पूरे भूमण्डल का भ्रमण करते हुए उसे सर्वत्र प्रसिद्ध और विस्तारित कर विश्व का कल्याण किया। महर्षि जी ने अपने विश्व व्यापी विशाल संस्था में दैनिक गुरुपूजन की नींव डाली। उनकी संस्था में प्रतिदिन के कार्यों का श्रीगणेश गुरु पूजन से ही होता है। पूज्य महर्षि जी प्रायः कहा करते थे – **''न गुरोरधिकं न गुरोधिकं न गुरोधिकं .....''** अर्थात् 'गुरु से अधिक कुछ भी नहीं'।

वस्तुतः गुरु शब्द का अर्थ है – अन्धकार का निवारण कर ज्ञान के प्रकाश को शिष्य के हृदय में स्थापित करना।

**गुकारश्चान्धकारो हि रुकारस्तेज उच्यते।**

**अज्ञान ग्रासकं ब्रह्म गुरुदेव न संशयः॥ ( गुरुगीता-स्कन्दपुराण )**

अज्ञान के तम का हरण कर ज्ञान के प्रकाश को स्थापित करने वाले गुरु, ब्रह्म हैं इसमें सन्देह नहीं। इसी विचार का पोषण महर्षि याज्ञवल्क्य ने भी किया है –

**''..... ब्रह्मरूपं विजानीयाद् गुरुमेवात्मनः सदा''**

**यत्किञ्चिद वाङ्मयं लोके सर्वमत्र प्रतिष्ठितम्।**

**करोति तत्प्रदानं यत् तस्माद् ब्रह्ममयो गुरुः॥ ( याज्ञवल्क्य शिक्षा )**

अर्थात् – गुरु को सर्वदा अपनी आत्मा से 'ब्रह्मरूप' ही जानना चाहिये। इस संसार में जो कुछ भी वाणी, भाषा या शब्द हैं वह सभी वेद में प्रतिष्ठित हैं। उस ज्ञान को जो व्यक्ति प्रदान करते हैं वे गुरुदेव उसी कारण 'ब्रह्ममय' अथवा 'ब्रह्मरूप' होते हैं।

गुरु तो अतिशय ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, वीर्य, शक्ति, तेज, सुशीलता, मृदुता , आर्जव (ऋजुता), करुणा, माधुर्य, सौहार्द, गम्भीरता, उदारता, चातुर्य, स्थैर्य, धैर्य, शौर्य, पराक्रम, कृतज्ञता, सत्यसंकल्प आदि असंख्य कल्याण कारी गुणसमुदाय के महासागर परब्रह्मभूत साक्षात् श्रीमन् नारायण ही हैं। उनकी महिमा तो शब्दों से परे है।

ऐसा देखने में आता है कि – ऋषि-महर्षि, सन्त महात्माओं ने अपनी कृतियों, ग्रन्थों का आरम्भ प्रायः गुरु वन्दना से ही किया है। उदाहरणार्थ- 'श्री रामचरित मानस' की रचना गुरु पद वन्दना से गोस्वामी श्री तुलसी दास जी ने प्रारम्भ की है-

**बन्दउँ गुरुपद पदुम परागा। सुरुचि सुवास सरस अनुरागा॥**

**अमिअ मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू॥**

''मैं (गोस्वामी तुलसी दास) गुरु महाराज के चरण कमलों के रज की वन्दना करता हूँ, जो सुरुचि (सुन्दर-स्वाद) सुगन्ध तथा अनुराग रूपी रस से पूर्ण है। वह अमर मूल (संजीवनी जड़ी) का सुन्दर चूर्ण है, जो सम्पूर्ण भवरोगों के परिवार को नाश करने वाला है।'' इस चौपाई में गुरु की महत्ता के लिये उन्होनें तीन तत्वों का उल्लेख किया है 1. कृपा 2. प्रखरता 3. प्रकाश – जिससे भौतिक दुर्बलताओं को नष्ट करके शिष्य में करुणा, तेज और ज्ञानात्मक प्रकाश का अवस्थान गुरु कृपा से होता है। गुरु के पद रज का तिलक गुणों के समूह को वश में करने वाला है

''किएँ तिलक गुन गन बस करनी।।''

गोस्वामी जी ने गुरु पद रज के साथ ही उनके पद-नख को भी अत्यन्त महत्व दिया है। उसे उन्होंने मणि के सदृश माना है जिससे निकलने वाली ज्योति मोहान्धकार को नष्ट कर देती है-

**श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती।।**

**दलन मोह तम सो सप्रकासू। बड़े भाग उर आवइ जासू।।**

श्री गुरु महराज के चरण नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है, जिसके स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है। वह प्रकाश, अज्ञानरूपी अन्धकार का नाश करने वाला है; वह जिसके हृदय में आ जाता है, उसके बड़े भाग्य हैं।

सन्त कबीर ने -

**गुरुगोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पायँ।**

**बलि हारी गुरु आपनो गोविन्द दियो बताय।।**

इस दोहे में ईश्वर से गुरु महिमा को ही उच्चता प्रदान की है। आगे भी वे कहते हैं-

**तीरथ नहाए एकफल संत मिले फल चार।**

**सत् गुरु मिले अनन्त फल कहें कबीर विचार।।**

जिसने गुरु का आशीर्वाद प्राप्त कर लिया है, वह अनपढ़ होते हुए भी विद्वानों को पढ़ाता है, नासमझ होते हुए भी समझदारों को समझाने की क्षमता रखता है। इस सम्बन्ध में महर्षि आयोद धौम्य और उनके शिष्य आरुणि उद्दालक का आख्यान वैदिक साहित्य में अतिप्रसिद्ध है-

आरुणि नामक शिष्य बड़ा ही विनम्र, सेवाभावी और आज्ञापालक था। सुरम्य आश्रम के खेतों की देख भाल में शिष्य की सेवा-समर्पण देख कर महर्षि आयोद धौम्य का हृदय भर आया- आरुणि के हृदय में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करते हुए वे बोले, बेटा! तूँ पढ़े बिना ही सभी शास्त्रों में निपुण हो जाएगा। गुरु कृपा से गुरुभक्त आरुणि के अंतर में शास्त्रों का ज्ञान स्वतः स्फूर्त होने लगा। आगे चल कर ये महर्षि आरुणि उद्दालक नाम से प्रसिद्ध हुए। जाबालिपुरम् (जबलपुर) के संस्थापक महर्षि जाबालि की गुरु भक्ति भी बहुत प्रेरणा प्रद है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गुरु प्रसाद से व्यक्ति में देवत्व जाग्रत होने में विलम्ब नहीं लगता। अतः इस गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर हम अपने-अपने माता-पिता तथा गुरुदेव के प्रति दृढ़ भक्ति का व्रत लेते हुए अपने जीवन को सफल बनायें।

**॥ जय गुरु देव ॥ जय महर्षि ॥**

# ई–ज्ञान मासिक सूचना पत्र

## स्मरण पत्र

प्रिय पाठकों,

हमें ई–ज्ञान डिजिटल समाचार पत्र के 37 वें संस्करण को प्रकाशित करते हुये बड़ा हर्ष हो रहा है। ई–ज्ञान के पिछले सभी प्रकाशित संस्करण ई–मेल के माध्यम से आप सभी को भेज दिये गये हैं। ई–ज्ञान के प्रत्येक संस्करण में, हम आपसे, आपके सम्बंधित क्षेत्रों की सूचना भेजने के लिऐ अनुरोध कर रहे हैं परन्तु हमें पर्याप्त समाचार एवं उपलब्धियां प्राप्त नहीं हो रही हैं। आपसे अनुरोध है कि अपने क्षेत्र एवं संस्थान से सम्बंधित सूचना एवं समाचार हिन्दी अथवा अंग्रजी में भेजें। ई–ज्ञान सूचना पत्र, प्रत्येक माह के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित किया जा रहा है। ई–ज्ञान सूचना पत्र से सम्बंधित सूचना एवं समाचार हमें प्रत्येक माह की 15 तारीख तक प्राप्त हो जाना चाहिये।

ई–ज्ञान मासिक सूचना पत्र महर्षि संस्थान के सभी सदस्यों, कर्मचारियों, शुभचिंतकों एवं सभी विद्यार्थियों के साथ–साथ ध्यान शिक्षकों, सिद्धि शिक्षकों, ध्यान–साधकों एवं जनप्रतिनिधियों की बड़ी संख्या तक पहुँच रहा है। इसके साथ ही साथ ई–ज्ञान सूचना पत्र सम्पूर्ण विश्व में महर्षि संस्थान के वैश्विक प्रतिनिधियों एवं अनुयायियों तक भी पहुँच रहा है।

**ई–ज्ञान मासिक सूचना पत्र में निम्नलिखित सूचनाओं तथा समाचारों को सम्मिलित किया जाता है:**

1. वर्तमान समय में महर्षि विद्या मन्दिर, महाविद्यालय, महर्षि संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों में संचालित पाठ्यक्रम।
2. ऐसे नये पाठ्यक्रम व कार्यक्रम जो महर्षि विद्या मन्दिर/महर्षि महाविद्यालय/महर्षि शिक्षा संस्थान/महर्षि विश्वविद्यालय में जोड़े गये हों।
3. वर्तमान में महर्षि शिक्षा संस्थान के विद्यार्थियों की संख्या विषयवार, वर्गवार एवं कक्षावार।
4. किसी भी नये पाठ्यक्रम का प्रारम्भ, पाठ्यक्रम का विवरण एवं स्थान का विवरण।
5. नये भवन निर्माण, भूमि पूजन, वास्तु पूजन एवं शिलान्यास की जानकारी।
6. नये भवन का उद्घाटन व प्रवेश की जानकारी।
7. किसी भी महर्षि संस्थान की विशेष उपलब्धि।
8. महर्षि शिक्षा संस्थान के प्राचार्यों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की विशेष उपलब्धियां।
9. शिक्षा, खेल, कला, संगीत, संस्कृति, भाषा, सामान्य ज्ञान, प्रतियोगिता एवं प्रतिभा खोज आदि के क्षेत्र में विद्यार्थियों की विशेष उपलब्धियां।
10. एन.सी.सी., एन.एस.एस., भारत स्काउट एवं गाईड एवं एडवेंचर कार्यक्रम की जानकारी।
11. महर्षि शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय एवं बहुराष्ट्रीय संगठनों में उच्च पदों पर नियुक्तियां।
12. भूतपूर्व छात्रों की अभूतपूर्व उपलब्धियां।
13. शिक्षकों, छात्रों, कर्मचारियों, अनुसंधान विभाग एवं संगठन के सदस्यों के उच्च स्तरीय लेखों के प्रकाशन की सूचना।
14. विद्यार्थियों के स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों, न्यूज चैनल एवं वेब साईट में उपल्बियों का प्रकाशन।
15. विद्यार्थियों का राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताऐं जैसे: लोक सेवा आयोग, भारतीय प्रशासनिक सेवा, आई.आई.एम., आई.आई.टी., पी.एम.टी., राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, विदेश सेवा, आई.आर.एस. एवं सेनाओं में विभिन्न पदों पर चयन एवं नियुक्ति।
16. संस्था द्वारा ली गई शासकीय एवं निजी क्षेत्र की परियोजनाओं का विवरण।

17. नये उत्पाद की जानकारी, विवरण एवं उसके मूल्य का उल्लेख।
18. वर्तमान में बाजार में उपलब्ध उत्पादों की जानकारी।
19. सांस्कृतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषय पर लेखों की जानकारी एवं विवरण।
20. किसी भी सामाजिक समस्या का वैदिक उपायों द्वारा समाधान।
21. किसी भी यज्ञ एवं अनुष्ठान का विवरण।
22. वैदिक महोत्सवों का विवरण।
23. भ्रमण कार्यक्रमों का वृतांत।
24. औद्योगिक निकायो का भ्रमण एवं प्रशिक्षण।
25. राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर के गणमान्य अतिथियों के आगमन का विवरण।
26. संस्थान द्वारा प्राप्त पुरूस्कार, प्रशंसा पत्र एवं मान्यता।
27. शैक्षिक एवं वाणिज्यिक सहयोग का विवरण।
28. महर्षि वैदिक कृषि का विवरण।
29. महर्षि वैश्विक आंदोलन का ब्यौरा।
30. किसी अन्य समान विषय या क्षेत्र जिसका उल्लेख अग्रलिखित नहीं है उसका विवरण।

हम महर्षि संस्थान के सभी राष्ट्रीय व वैश्विक प्रतिनिधियों, सदस्यों, प्राचार्यों, शिक्षकों, कर्मचारियों, छात्रों, ध्यान साधकों एवं सभी पाठकों के लेख एवं समाचार आमंत्रित करते हैं। कृपया ध्यान दें की सभी समाचार सही, प्रमाणिक एवं मूल रूप में होना चाहिये। केवल अपने स्वयं के लेखों को ही भेजें।

कृपया ध्यान दें कि सभी सामाग्री की एक सॉफ्ट कापी वर्ड फारमेट में निम्न ईमेल पर भेजें – **(egyan@mahaemail.com** एवं **egyanmonthly@gmail.com)** या सभी दस्तावेजों की एक मूलप्रति, सी.डी. के माध्यम से निम्न पते पर भेजें– **डॉ. टी. सी. पाठक, राष्ट्रीय निदेशक, संचार एवं जनसम्पर्क, महर्षि विद्या मंदिर समूह, महर्षि सेन्टर फॉर एज्यूकेशनल एक्सीलेंस, बिल्डिंग न. 5, लाम्बाखेड़ा, बैरसिया रोड़ भोपाल–462018,** दस्तावेजों की सॉफ्ट कापी एवं हार्ड कापी हिन्दी के देवनागरी लिपि/चाणक्य एवं अंग्रजी के टाईम्स न्यू रोमन फॉन्ट में अग्रलिखित पतों पर भेंजे। तस्वीरें एवं चित्र उच्च गुणवत्ता में भेजें ताकि आपकी रिपोर्ट को उच्च स्तरीय बनाने में तथा पाठकों को पढ़ने में उपयोगी हो सके।

ई–ज्ञान, सम्पादक मण्डल किसी भी कॉपी राइट जानकारी या लेखों के लिये उत्तरदायी नहीं होगा। यदि किसी असत्य जानकारी को सम्पादक मण्डल के पास भेजा जाता है तो प्रेषक के लेखों या रिपोर्ट को भविष्य में प्रकाशित नहीं किया जायेगा।

कृपया अपने सभी मित्रों, सहयोगियों एवं पारिवारिक सदस्यों को ई–ज्ञान सूचना पत्र की सदस्यता ग्रहण करने एवं वेबसाईट www.e-gyan.net पर अवलोकन के लिये अनुरोध एवं प्रोत्साहति करें।

टी. सी. पाठक
सम्पादक मंडल, ई–ज्ञान मासिक सूचना पत्र

*Copyright © 2012 by Maharishi Ved Vigyan Prakashan*
*All rights reserved. No part of E-Gyan Monthly Digital News Letter may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including Photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of Maharishi Ved Vigyan Prakashan.*
*Maharishi Ved Vigyan Prakashan, Chhan, Bhojpur Temple Road, Post - Misrod, Bhopal, Madhya Pradesh, Phone: +91 755 4087351*